RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष-13, अंक-11, हिन्दी (मासिक), दिसंबर 2026, पृष्ठ 16, मूल्य- 17:50

किसान दिवस

वैश्विक शिखर सम्मेलन में देश- विदेश से नामचीन हस्तियों ने लिया भाग

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन बोले-

ब्रह्माकुमारी की संस्कृति में दिखाई देती है भारतीय संस्कारों की जीवंत झलक



शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में चार दिवसीय (23 अक्टूबर से 26 अक्टूबर) वैश्विक शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। विश्व नवनिर्माण के लिए आध्यात्मिक जागृति विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में सात देशों से छह हजार से अधिक धर्म, अध्यात्म, राजनीति, समाजसेवा, पर्यावरण, विज्ञान, व्यापार और शिक्षा जगत से जुड़ी नामचीन हस्तियों ने भाग लिया। दस सत्रों में 60 से अधिक विद्वान वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। शुभारंभ सत्र में केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने तो समापन सत्र में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने शिरकत की।

समापन सत्र में राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से आबूरोड में एयर स्ट्रिप के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे थे और मांग की जा रही है। आने वाले समय में जल्द ही आबूरोड में एयर स्ट्रिप का काम होगा।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान की 90 वर्षों की गौरवशाली यात्रा पर दृष्टि डालें तो वर्ष 1936 में प्रारंभ हुई यह यात्रा अनेक चुनौतियों के बावजूद निरंतर आगे बढ़ती रही है। ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने एक महान आध्यात्मिक दृष्टि के साथ इस अभियान की नींव रखी। प्रारंभ में आठ युवा बहनों के समर्पण से शुरू हुई यह यात्रा आज विशाल स्वरूप लेकर विश्वभर में मानव कल्याण और आध्यात्मिक जागृति और समाज को संजीवनी देने का कार्य कर रही है। यह यात्रा संकल्प, त्याग, निष्ठा और सेवा की शक्ति का प्रेरणादायी उदाहरण है।

अध्यक्ष नवीन ने कहा कि वर्ष 1950 से संस्थान ने इस पवित्र भूमि पर अपनी आध्यात्मिक गतिविधियों को विस्तार दिया। माउंट आबू की इस पवित्र नगरी को ब्रह्माकुमारीज़ ने योग और साधना की भूमि के रूप में नई पहचान दी है। महर्षियों और ऋषियों की तपोभूमि को आध्यात्मिक साधना का प्रमुख केंद्र बनाने में ब्रह्माकुमारी परिवार का योगदान सराहनीय है। आज संस्थान 140 से अधिक देशों में कार्य कर रहा है और विश्वभर में इसके पांच हजार से अधिक सेवाकेंद्र लोगों तक आध्यात्मिकता, भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों का संदेश पहुंचा रहे हैं। आपके विचारों और प्रयासों के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक विरासत को विश्व स्तर पर आगे बढ़ाया जा रहा है।

अच्छे विचार तभी साकार होते हैं, जब वे हमारे संस्कार बन जाते हैं: भाजपा अध्यक्ष नवीन ने कहा कि आध्यात्मिक जागृति, सकारात्मक चिंतन, सेवा और समर्पण की भावना इस राष्ट्रीय संकल्प को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। 90 वर्षों की यात्रा भी इसी बात की प्रेरणा देती है कि जब विचारों के साथ कर्म जुड़ता है, तो परिवर्तन की नई राहें खुलती हैं। ब्रह्माकुमारी का पूरा मिशन सेवा को लेकर कार्य कर रहा है। सेवा केवल कोई गतिविधि नहीं, बल्कि एक ऐसा संकल्प है, जो व्यक्ति को अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करने की प्रेरणा देता है।

04 दिन चला वैश्विक शिखर सम्मेलन

10 सत्र आयोजित किए गए

60 से अधिक विद्वानों ने रखे अपने विचार

06 हजार देश-विदेश से आए लोगों ने लिया भाग

मुख्यमंत्री बोले- ब्रह्माकुमारीज़ साधना, सेवा और विश्व कल्याण की भावना का केंद्र

सेवाकेंद्र से जुड़े लोगों की सादगी, सरलता और समर्पण ने प्रेरित किया

नवीन ने कहा कि मुझे याद है कि छोटे-छोटे सेवाकेंद्रों में भी लोग ध्यान के बाद एक नई शक्ति और ऊर्जा का अनुभव करते हैं। यह ऊर्जा न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बनाने में सहायक होती है, बल्कि उन्हें समाज के कल्याण के लिए भी प्रेरित करती है। मैं आज इन केंद्रों का उल्लेख इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि यहां आकर मुझे स्वयं भी एक मिनट की शांति के महत्व और उससे मिलने वाली आंतरिक ऊर्जा का अनुभव करने का अवसर मिला। हर सेवा केंद्र से जुड़े लोगों की सादगी, सरलता और समर्पण का भाव मेरे लिए प्रेरणा का प्रारंभिक स्रोत रहा है। इन अनुभवों ने मुझे आध्यात्मिकता और समाजसेवा के क्षेत्र में संस्थान के योगदान को समझने का अवसर दिया। यहां मातृशक्ति का नेतृत्व भी विशेष प्रेरणा का स्रोत रहा है। संगठन मानवीय मूल्यों के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहा है।



ब्रह्माकुमारी की संस्कृति में भारतीय संस्कार

अध्यक्ष नवीन ने कहा कि ब्रह्माकुमारी की संस्कृति में भारतीय संस्कारों की जीवंत झलक दिखाई देती है। ये संस्कार तब और अधिक सशक्त होते हैं, जब वे सेवा की भावना से जुड़कर समाज के कल्याण में योगदान देते हैं। संस्कार और सेवा का यही समन्वय भारतीय संस्कृति की वास्तविक पहचान है। ब्रह्माकुमारी संस्थान निरंतर समाज की कमियों को दूर करने, अच्छी परंपराओं को प्रोत्साहित करने और मानवीय मूल्यों को नई ऊर्जा देने का प्रयास कर रहा है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान साधना, सेवा और विश्व कल्याण की भावना का केंद्र है। संस्थान सनातन और भारत को विश्व गुरु बनाने के लिए पूरी दुनिया में काम कर रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ की 90 वर्ष की आध्यात्मिक यात्रा अनेक लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन, अनुशासन और प्रेरणा लेकर आई है। भारत हजारों वर्ष से वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को लेकर चल रहा है। हम सदियों से वनस्पति से लेकर वायुमंडल की कल्याण की भावना, सर्वे भवंतु सुखिन: की भावना को लेकर आए हैं।

योग देता है आत्म सुधार की प्रेरणा-

सीएम शर्मा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान राजयोग के माध्यम से व्यक्ति के मन में शांति, शक्ति और ऊर्जा का संचार कर विश्व कल्याण के लिए काम कर रहा है। योग और आध्यात्मिकता हमें अपने भीतर देखने और आत्म सुधार की प्रेरणा देते हैं। संस्थान भारत के विचारों को दुनिया तक पहुंचाने में इसी प्रकार कार्य कर रहा है। साथ ही आत्म चिंतन, राजयोग के साथ विभिन्न सामाजिक अभियानों में भी भागीदारी करता रहा है। ऐसी पहल दिखाती है कि आध्यात्मिक पहल जीवन के प्रश्नों का समाधान कर सकती है। राम मंदिर, महाकाल मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर में किए गए कार्यों से हमारी विरासत और संस्कृति को नई आध्यात्मिक गरिमा के साथ प्रस्तुत करने का मौका मिला है। एक तरफ हम तीर्थ स्थलों के विकास के लिए कार्य कर रहे हैं तो दूसरी ओर पर्यावरण संरक्षण के लिए कदम भी उठा रहे हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि हम लोग ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम में आते रहते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ ने भारत के योग को विश्व में प्रसिद्ध करने में भूमिका निभाई। अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. मृत्युंजय भाई ने स्वागत भाषण दिया।



वैश्विक शिखर सम्मेलन- पहला दिन(स्वागत सत्र)

देश-विदेश का हर युवा राजयोग करेगा तो वर्तमान परिस्थितियां नहीं देखनी पड़ेगी: भाजयुमो अध्यक्ष डॉ. जोशी

ब्रह्माकुमारीज़ में 50 वर्ष से सेवा दे रहे राजयोगी भाई-बहनों का किया गया विशेष सम्मान



सभा को संबोधित करते हुए भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जोशी

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में आयोजित विशाल वैश्विक शिखर सम्मेलन के स्वागत सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हेमांग जोशी ने भाग लिया। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ में 50 साल से समर्पित रूप से तन-मन-धन से अपनी सेवाएं दे रहे राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहनों का पगड़ी, पट्टा और माला पहनाकर विशेष सम्मान किया गया।

सभा को संबोधित करते हुए भाजयुमो के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जोशी ने कहा कि यदि हर युवा राजयोग करेगा तो आज जो हमें देश-विदेश में परिस्थितियां देखती को मिल रहीं हैं तो वह नहीं होगा। क्योंकि राजयोग से जब हर युवा सकारात्मक होगा तो ऐसी परिस्थितियां निर्मित ही नहीं होंगी। मैंने जब ब्रह्माकुमारीज़ में राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया तो कुछ ऐसी परिस्थितियों का निर्माण हुआ कि मुझे भाजपा और देश के सबसे युवा सांसद के रूप में मौका मिला। युवा होने के नाते कई बार ऐसा होता है कि जब हमें कोई बड़ी जिम्मेदारी मिलती है तो हम उसका पाचन नहीं कर पाते हैं, लेकिन राजयोग मेडिटेशन का कोर्स करने के बाद मेरे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया। अब मेरी जर्नी रिएक्शन से रिस्पांस की ओर बढ़ी। राजयोग से मेरे मन में मानसिक स्थिरता आई। जब जीवन में कोई परिस्थिति आती है तो तुरंत कोई रिएक्शन करने के बजाय सोच-समझकर रिस्पांस करता हूं।

डॉ. जोशी ने कहा कि शांतिवन शांति की गंगोत्री है, जहां से पूरे विश्व में शांति की गंगा प्रवाहित हो रही है। महिला सशक्तिकरण का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है, जहां महिलाएं आध्यात्मिक नेतृत्व के साथ विश्व में शांति और सद्भाव का संदेश दे रही हैं और हम सबको जीवन का कल्याण करने के लिए प्रेरित कर रही हैं।



हिमाचल प्रदेश के भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल ने कहा कि नारी शक्ति का कहीं वंदन है तो वह ब्रह्माकुमारीज़ में है। ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका मोहिनी दीदी ने 16 वर्ष की आयु में विश्व कल्याण के लिए जीवन समर्पित कर दिया। आज नवदशकोत्सव के अवसर समय है। हजारों ब्रह्माकुमारी भाई-बहनों के अभिनंदन करने का, जिन्होंने देश-विदेश में सनातन को फैलाने का कार्य किया। मैंने कल आश्रम में अलग ही अनुभूति की। जो यहां प्रेम है, स्नेह है, वह विलक्षण है। जब सुबह बाबा के महावाक्य सुन रहा था तब अनुभव हुआ कि मैं अलग ही दुनिया में आ गया हूं।



ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी ने कहा कि मुझे गर्व हो रहा है कि 70 वर्षों से मुझे शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा की छत्रछाया मिली। परमात्मा की पहचान मिली। हम सभी का आत्मिक संबंध बना, हम सभी भाई-बहन बन गए। ब्रह्माकुमारीज़ का विश्व व्यापी सबसे बड़ा परिवार है। बाबा ने ऐसा परिवार बनाया, जिसके द्वारा पूरा विश्व एक परिवार बना। सारे विश्व में यह विश्व विद्यालय राजयोग के ज्ञान व शिक्षाओं द्वारा सबके जीवन को उज्जवल बना रहा है। दूसरों के प्रति हमारा संकल्प शुभ और श्रेष्ठ हो। आपस में प्रेम, एकता और सद्भावना हो।



अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि मुझे बचपन से ही वरिष्ठ दादियों के साथ ईश्वरीय सेवा करने का परम सौभाग्य मिला। दादियों की अथक सेवा का ही परिणाम है कि आज यह संस्था पूरे विश्व में अध्यात्म की रोशनी से जन-जन को प्रकाशित कर रही है। दादियों की त्याग-तपस्या और सेवा से आज इतना विस्तार हुआ है। छोटा सा वृक्ष आज इतना विशाल वटवृक्ष हो गया है। मुख्यालय शांतिवन में देश-विदेश से हर वर्ष लाखों लोग आते हैं और परमात्मा शिव बाबा का संदेश लेकर जाते हैं। जीवन में सुख-शांति की अनुभूति करके जाते हैं।



अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी ने कहा कि जब वर्ष 1936 में ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक ब्रह्मा बाबा को सबसे पहले ज्योतिर्बिंदु स्वरूप परमात्मा का प्रकाश के रूप में साक्षात्कार हुआ तो उन्होंने स्वर्ग का सीन देखा कि कैसे सतयुग में हर आत्मा अपने मूल स्वरूप में सर्वगुण संपन्न होती है। साथ ही उन्हें इस कलियुगी दुनिया के महाविनाश का भी साक्षात्कार हुआ। फिर परमात्मा की प्रेरणा से बाबा ने ओम मंडली नाम से इस विश्व परिवर्तन के कार्य की नींव रखी, जिसे आज हम सभी ब्रह्माकुमारीज़ के नाम से जानते हैं।

ये भी रहे मौजूद-

अतिरिक्त महासचिव डॉ. बीके मृत्युंजय भाई ने स्वागत भाषण दिया। इस मौके पर प्रसिद्ध अभिनेत्री सुश्री अक्षरा सिंह, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर कुलदीप सिंघानिया, श्री सत्य साईं मानव उत्कृष्टता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बीएन नरसिम्हा मूर्ति, ग्लोबल पीस फाउंडेशन एवं इंडो-पैसिफिक पीस फोरम के अध्यक्ष डॉ. मार्कंडेय राय, एबीपी न्यूज़ के परामर्श संपादक संदीप चौधरी, श्री कल्पतरु संस्थान के संस्थापक विष्णु लांबा, सेल्फी विद डॉटर अभियान के संस्थापक सुनील जगलान, अमृता विद्यालयम दिल्ली की प्राचार्य ब्रह्मचारिणी चिन्मयामृता चैतन्या, वरिष्ठ राजयोगी बीके प्रकाश भाई सहित देश-विदेश से आए मेहमान मौजूद रहे। संचालन बीके रुपेश भाई ने किया।



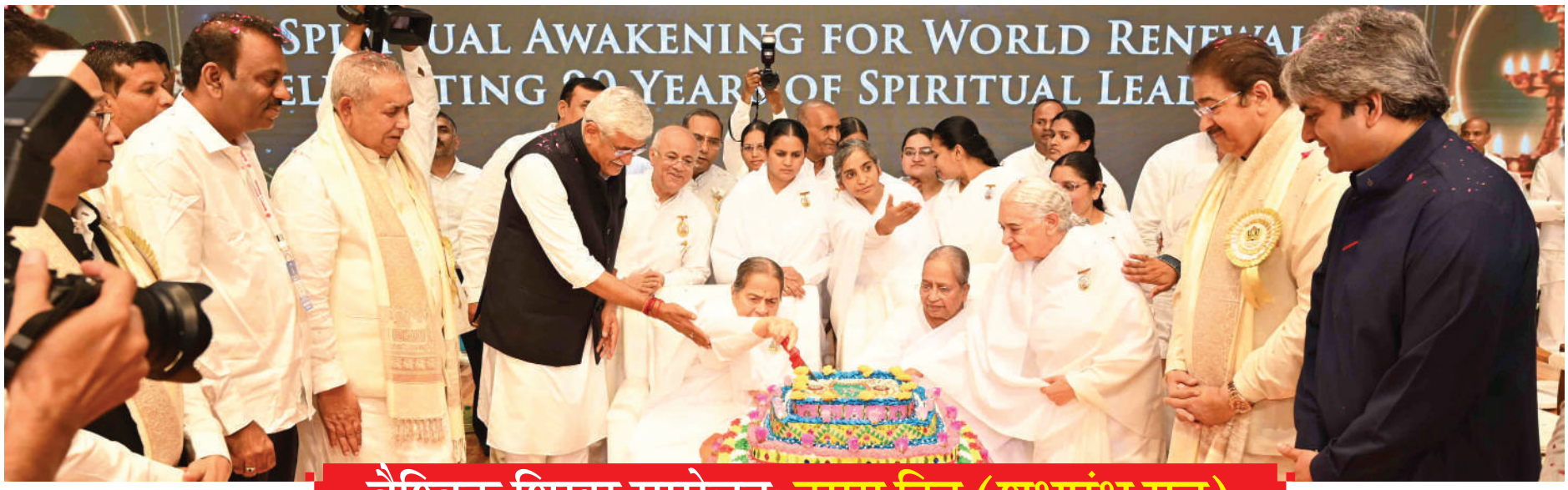
संस्थान के महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि आप सबका यहां आना सच्चे नेतृत्व को दर्शाता है। यह केवल एक कार्यक्रम नहीं है, हम नवदशकोत्सव मना रहे हैं। यह इस संस्था के 90 वर्षों की यात्रा की झलक है। जिसकी शुरुआत बहुत सरल किंतु गहरी थी। इस ईश्वरीय ज्ञान से पूरी मानवता को जगाना और इस कार्य में माताओं और बहनों को आगे रखना एक बड़ा कार्य है। जब हमारी चेतना बदलती है तो हमारे आसपास की दुनिया बदल जाती है। स्वयं के बदलने से ही विश्व परिवर्तन होता है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का यह नारा आज लाखों लोगों के जीवन परिवर्तन का सूत्र वाक्य बन गया है। लाखों लोग राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से अपना जीवन श्रेष्ठ और महान बनाने के मार्ग पर अग्रसर हैं। आप सभी का यहां परमात्मा के घर में स्वागत है।



सम्मेलन के आयोजक एवं संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी डॉ. बीके मृत्युंजय ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के इतिहास का आज स्वर्णिम दिन है। 90 वर्षों की यात्रा में 140 देशों में पहुंचकर हम शिक्षा दे रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज़ ने एक आंदोलन का रूप धारण कर लिया है। संस्थान को यहां तक पहुंचाने में दादी प्रकाशमणि जी, दादी जानकी जी, दादी हृदयमोहिनी जी, दादी रतनमोहिनी जी व अन्य वरिष्ठ तपस्विनी आत्माओं की सेवा, त्याग-तपस्या, साधना, मौन तपस्या, निष्ठा और सेवाभाव ने संस्थान की नींव को मजबूत बनाया है। आज सभी को याद करते हुए देश-विदेश से पहुंचे हजारों अतिथियों का परमात्मा के इस घर में स्वागत है... अभिनंदन है। यह सम्मेलन आपके जीवन में बदलाव का नया जरिया बने। यही हमारी शुभ भावना-शुभकामना है।



ऑल इंडिया इमाम ऑर्गनाइजेशन के प्रमुख इमाम डॉ. उमर अहमद इलियासी ने कहा कि कई साल पहले जब मैं यहां आया था, तब दादी जानकी से मुलाकात हुई थी। मैंने ब्रह्माकुमारीज़ को हमेशा से अपना परिवार समझा, मुझे भी यहां से परिवार जैसा ही प्रेम मिला है। जयंती दीदी के साथ काफी वर्षों पहले इंग्लैंड में, नीदरलैंड, जर्मनी में ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रम में उपस्थित होने का मौका मिला। मैंने इस संस्था के बारे में पढ़ा नहीं, बल्कि जयंती बहन, दादी जानकी, दादी प्रकाशमणि जो के आचरण और स्वभाव से इस संस्था को समझा। हमारी जातियां अलग हो सकती है, पूजा पद्धति, इबादत, धर्म अलग हो सकते हैं, लेकिन हमारा सबसे बड़ा धर्म इंसान और इंसानियत का है। ब्रह्माकुमारीज़ मानवता का यही संदेश दे रही हैं। हम सबके धर्मों का सम्मान करें।



वैश्विक शिखर सम्मेलनः दूसरा दिन (शुभारंभ सत्र)

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में ब्रह्माकुमारीज़ की भूमिका महत्वपूर्ण है: केंद्रीय मंत्री शेखावत

केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने किया वैश्विक शिखर सम्मेलन का शुभारंभ

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वैश्विक शिखर सम्मेलन का विधिवत शुभारंभ भारत सरकार के केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी, अतिरिक्त महासचिव डॉ. राजयोगी बीके मृत्युंजय भाई, सुप्रसिद्ध पत्रकार डीडी न्यूज के एडिटर इन चीफ सुधीर चौधरी व अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर किया।

इस दौरान केंद्रीय मंत्री शेखावत ने ब्रह्माकुमारीज़ की 90 वर्ष की यात्रा से लेकर पर्यावरण, पुरातन संस्कृति, अध्यात्म, वर्तमान वैश्विक परिदृश्य, टेक्नोलॉजी, इतिहास और भारतीय दर्शन पर बात की। उन्होंने कहा कि वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में ब्रह्माकुमारीज़ की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। आज पूरा विश्व द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे ज्यादा चुनौतियों से गुजर रहा है। दुनिया में देशों का आपसी विश्वास कम हुआ है। साथ ही पर्यावरण के संकट के दौर से गुजर रहे हैं। ऐसे समय में ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थाओं की जिम्मेदारी और बढ़ गई है कि हमारे आने वाला भविष्य कैसा हो?

केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि विचारणीय प्रश्न है कि जिस गति से बाहरी परिवर्तन हो रहे हैं, क्या उस गति से आंतरिक परिवर्तन हो रहा है? हमारे परिवार, शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक जीवन से जुड़े यह प्रश्न सबके लिए प्रासांगिक और महत्वपूर्ण हैं। फिर चाहे पॉलिटिकल, सोशल या स्प्रीचुअल लीडरशिप हो सभी के सामने आज यह प्रश्न हैं। सभी मानसिक दबाव से गुजर रहे हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ को लेकर क्या बोले केंद्रीय मंत्री-

केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ की 90 साल की यात्रा उस संकल्प की यात्रा है जिसने असंख्य परिवारों, लाखों परिवारों के जीवन में सद्भाव का जागरण किया। एक ऐसी संस्था जिसने विदेशों में जाकर के भारत की संस्कृति, भारत के मूल्यों को प्रसारित किया। राजयोगी भाई-बहनों ने अपना जीवन समर्पित करके कितने लोगों और परिवारों को सोचने का संस्कार दिया है। नवदशकोत्सव का अवसर हम सभी को एक नई ऊर्जा और नए संकल्प के साथ आगे बढ़ने का अवसर है। भारत की ज्ञान परंपरा, दर्शन, आध्यात्मिकता चेतना ने जब भी जरूरत पड़ी है तो पूरे विश्व को राह दिखाई है। आज कहीं शांति का समाधान है तो शांति मंत्र में समाहित है। सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः सिर्फ एक मंत्र नहीं, हमारी संस्कृति है। भारत की सभ्यताओं को मिटाने की कई बार कोशिशें की गईं, लेकिन सभ्यता और संस्कृति आज भी सदियों से खड़ी है और सदा रहेगी। विश्व का कल्याण केवल भारत की चेतना, संस्कृति और सभ्यता के माध्यम से ही हो सकता है।

सुप्रसिद्ध पत्रकार सुधीर चौधरी ने कहा- जिंदगी में मुझे भी जितने मौके मिले, उसके पीछे ब्रह्माकुमारीज़ की ताकत है



सुप्रसिद्ध पत्रकार डीडी न्यूज के एडिटर इन चीफ सुधीर चौधरी को 'राष्ट्र चेतना पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि मैं यहां दस साल पहले आया था। जब इसी हॉल में सुखद अनुभव हुआ, मानसिक शांति मिली। घर जाकर लगा कि ट्रांसफॉर्मेशन लेकर आया हूं। उसके बाद जीवन में सबकुछ अच्छा हुआ। जिंदगी में मुझे भी जितने मौके मिले, उसके पीछे ब्रह्माकुमारीज़ की ताकत है। जब आपको दिन-रात युद्ध की खबर दिखानी है, तब अपने आपको पॉजिटिव रखना बड़ी चुनौती है। इंसान ने दुनिया को बदलने की ताकत तो हासिल कर ली है, लेकिन क्या खुद को बदलने की ताकत हमारे पास है? आध्यात्मिकता की असल परीक्षा बंद कमरे में नहीं दुनिया में होती है। बल्कि जो लोग हमारे विचारों से मेल नहीं खाते हैं उनके साथ हमारा व्यवहार कैसा है, यही असली परीक्षा है। इंटेलीजेंस तो बढ़ रही है, लेकिन विजडम घट रही है। दुनिया का नवीनीकरण करने के लिए मानवीय मूल्य और नई चेतना की जरूरत है। दुनिया में बदलाव के लिए प्रदर्शन हो रहे हैं, लेकिन लोगों को समझना होगा कि सबसे पहले खुद में बदलाव लाना होगा।



» सम्मेलन के शुभारंभ सत्र में सुप्रसिद्ध टीवी एक्ट्रेस अक्षरा सिंह का अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी और एजुकेशन विंग की मुख्यालय संयोजिका बीके शिविका दीदी ने परमात्मा का स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मान किया।

सम्मेलन के यादगर पल...

» वरिष्ठ पत्रकार अमन चोपड़ा को गौरव सम्मान से नवाजा गया। उन्होंने कहा कि मैंने ब्रह्माकुमारीज़ में आने में बहुत देर कर दी। जीवन को चार्ज करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्था है।

» प्रसिद्ध पार्श्व गायिका पद्मश्री अनुराधा पौंडवाल ने कहा कि मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे यहां आने का अवसर मिला है।

» नई दिल्ली के टाइम्स फाउंडेशन के मार्केटिंग एवं ब्रांडिंग के नेशनल हेड राजीव डोभाल ने कहा कि यहां आना सौभाग्य की बात है।

» महाराष्ट्र के आकार फाउंडेशन की महिला गायकों एवं मधुबन के मधुर वाणी ग्रुप के कलाकारों द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया।

» सभी अतिथियों का पगड़ी, माला, शॉल और मोमेंटो प्रदान कर सम्मान किया गया।

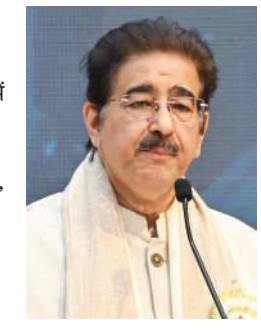
» केक काटकर 90 साल की यात्रा की सेरेमनी मनाई गई।

» पुणे की युगंधर वाद्यपथक ढोल-ताशा पार्टी ने अपनी जोरदार प्रस्तुति दी।

» महाराष्ट्र के आकार फाउंडेशन की 108 महिला गायकों द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति दी गई।

» बीके शिविका बहन ने मंच संचालन किया।

नोएडा फिल्म सिटी, मारवाह स्टूडियो एवं एएएफटी के संस्थापक डॉ. संदीप मारवाह ने कहा कि दुनिया की सबसे खूबसूरत है भावनाएं और विचार ब्रह्माकुमारीज़ में मिलते हैं। मनोरंजन जगत में हमने समाज को कभी भी जाति, समाज, वेश भूषा, गोरा-काला में नहीं बांटा है। जब हमने शांति पर बनी फिल्मों के फेस्टिवल का आयोजन किया तो चार फिल्में हमें ब्रह्माकुमारीज़ ने भेजी। मुझे विभिन्न मंचों से दो हजार अवॉर्ड्स मिले, मैं उसका श्रेय ब्रह्माकुमारीज़ को देता हूं।



जी मीडिया कॉर्पोरेशन लिमिटेड के सीईओ रक्तिम दास ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ की 90 वर्षों की यात्रा अविस्मरणीय है। संस्थान की सामाजिक सेवाएं सराहनीय हैं। आज के समय पर मीडिया की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। हमें आशावाद को बढ़ाना होगा। हमें ऐसी खबरें करनी होंगी, जो लोगों में आशा का संचार करें। सकारात्मक समाज का निर्माण करें। इस ग्लोबल समिट की थीम इस समय की सबसे बड़ी जरुरत है। हमें तकनीक का गुलाम नहीं बनना है, बल्कि उसका मालिक बनना है।





वैश्विक शिखर सम्मेलनः दूसरा दिन (प्लेनरी सेशन-1)

दुनिया की समस्याओं का समाधान ब्रह्माकुमारीज़ के पास हैः गृह मंत्री नटुंग

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वैश्विक शिखर सम्मेलन के दूसरे दिन शाम के प्लेनरी सेशन-1 में अध्यात्म, राजनीति, व्यापार और प्रशासनिक सेवा से जुड़ी हस्तियों ने अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि अरुणाचल प्रदेश के गृहमंत्री और अंतर्राज्यीय सीमा मामलों के मंत्री मामा नटुंग ने कहा कि हमें यहां परमात्मा ने बुलाया ताकि हमारा देश भारत हमको जाने। नालंदा विश्वविद्यालय तब था, जब मिडिल ईस्ट में शिक्षा का कोई नामो-निशान नहीं था। इसलिए भारत विश्व गुरु था। दुनिया की समस्याओं का समाधान ब्रह्माकुमारीज़ के पास है। दुनिया ये मान रही है कि ब्रह्माकुमारीज़ संजीवनी बूटी का काम कर रही है। क्लाइमेट चेंज का समाधान केवल भारत के पास है। इस दौरान एक रोचक नजारा देखने को मिला। एक्सरसाइज के जो स्टेप गृहमंत्री ने सुबह के सेशन में सीखे, वहीं स्टेप अपने वक्तव्य के दौरान सभी लोगों को कराए।





अनुराधा पौंडवाल के सुरों से सजी शाम

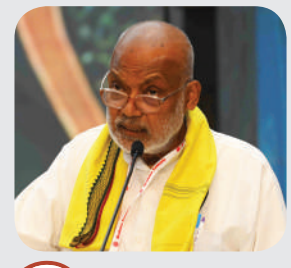
वैश्विक शिखर सम्मेलन में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने सम्मेलन में समां बांध दिया। संगीत संध्या में मुंबई से आईं सुप्रसिद्ध पार्श्व गायिका अनुराधा पौंडवाल, उनकी बेटी कविता पौंडवाल एवं टीम ने संगीत की ऐसी सुर लहरियां बिखेरी की हर कोई भक्तिरस में डूब गया। सम्मेलन में मौजूद हर कोई उनके सुर से सुर मिला रहा था। इंदौर के शक्ति निकेतन छात्रावास से आईं बालिकाओं ने देशभक्ति से लेकर शिव स्तुति की प्रस्तुति से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। बालिकाएं ने ऐसे हैरतअंगेज करतब दिखाए कि डायमंड हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

ये भी रहे मौजूद

माउंट एवरेस्ट को फतह करने वाली पहली महिला सुप्रसिद्ध पर्वतारोही डॉ. मनस्वी अग्रवाल का विशेष रूप से सम्मान किया गया। उत्तराखंड से राज्यसभा सांसद डॉ. नरेश बंसल, दिल्ली खादी बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष एवं विधायक वीर सिंह ढिंगन, टांगरी इंश्योरेंस एंड फाइनेंशियल ग्रुप कनाडा के अध्यक्ष अश्विनी टांगरी, लोढ़ा फाउंडेशन मुंबई की चेयरमैन मंजू लोढ़ा, राजस्थान सरकार के कृषि एवं पंचायती राज विभाग के आयुक्त नरेश कुमार गोयल, एंकर सुश्री पीनाज त्यागी, एमएस जय भारत स्पाइसेस प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक-अध्यक्ष सुरेंद्र नाथ पांडा, प्रख्यात उद्योगपति राधेश्याम भाई, सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय गंगटोक के कुलपति प्रो. सांतनु कुमार स्वैन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। जयपुर की डायरेक्टर राजयोगिनी सुषमा दीदी ने राजयोग ध्यान से शांति की अनुभूति कराई।



बेंगलुरु विधायक दिनेश गुंडु राव ने कहा कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ में आकर मुझे लगा कि बहुत पहले आ जाना चाहिए था। ब्रह्माकुमारीज़ पवित्रता का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनका कोई दूसरा एजेंडा नहीं है। ब्रह्माकुमारीज़ कभी किसी चीज की अपेक्षा नहीं रखती, बल्कि मानवता, प्रेम, शांति और सद्भाव को फैलाने का कार्य करती हैं। सामाजिक बदलाव में संस्थान का बड़ा योगदान है।



पूर्व केंद्रीय मंत्री संजय पासवान ने कहा कि मैं 25 वर्षों से यहां से जुड़ा हूं। आज चौथी बार आया हूं। स्प्रिचुअल होना स्वयं के लिए, परिवार, समुदाय, देश, दुनिया, मानवता के लिए अनिवार्य है। हम सबका लक्ष्य मानवता की रक्षा है। ब्रह्माकुमारीज़ के 90 वर्षों की यात्रा के कारण भारत का भारततत्व बचा हुआ है। ब्रह्माकुमारीज़ के गुण को ग्रहण करें, दुनिया को बेहतर करें।

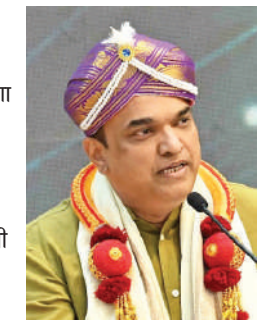


भारतीय विदेश सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी भूतपूर्व राजदूत दीपक वोहरा ने कहा कि अमेरिका के पास 34 करोड़ आबादी है। डोनाल्ड ट्रंप को बता दो कि भारत के पास 34 करोड़ विद्यार्थी हैं। आज जब भारत बोलता है तो दुनिया सुनती है, क्योंकि यह सशक्त भारत है। आज अगर पूरी दुनिया में कृषि खत्म हो जाए तो भारत में इतना चावल है कि वो कई महीनों तक खिला सकता है।

वाराणसी से आईं श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा की महामंडलेश्वर मुक्तेश्वरी गिरि महाराज ने कहा कि महादेव ने बताया सेवा से बड़ा कोई कर्म नहीं, सरलता से बड़ा कोई धर्म नहीं है। आज सेवा और सरलता ही ब्रह्माकुमारीज़ की पहचान है। यहां की बहनें अध्यात्म और योग के संदेश से लोगों का जीवन बदल रही हैं। संस्थान बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही है। हमारा उद्देश्य एक ही है राष्ट्र सेवा और समर्पण। यहां आकर बहुत ही सुखद अनुभूति हुई है।

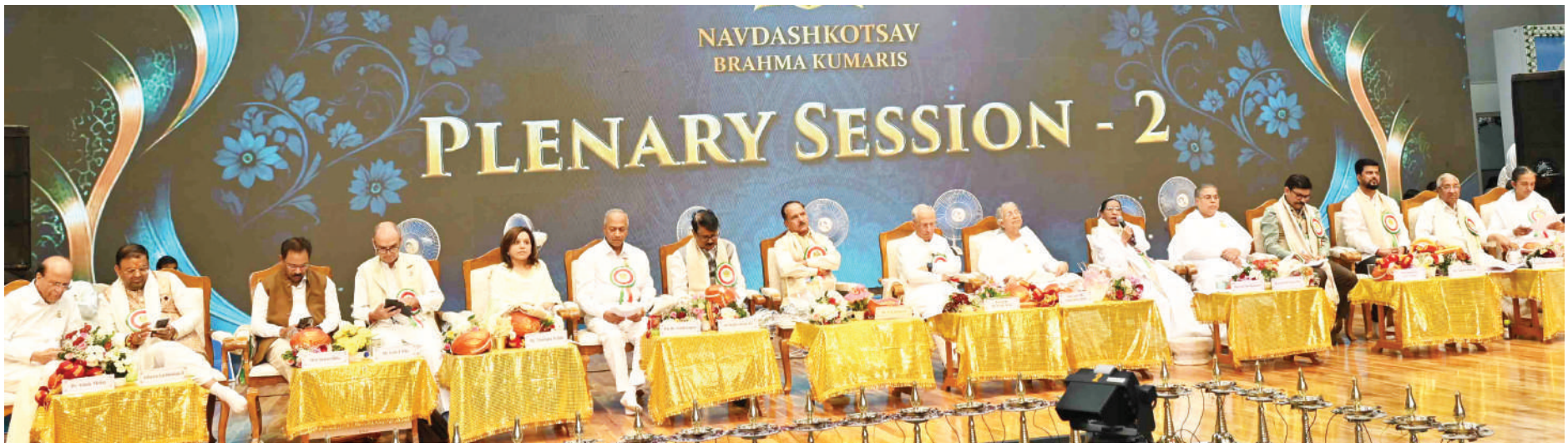


पेसिफिक मेडिकल यूनिवर्सिटी उदयपुर के डिपार्टमेंट ऑफ न्यूरो साइंसेस के कंसल्टेंट इंटरवेंशल न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अतुलाभ बाजपेयी ने कहा कि आप वर्षों तक योगा करते हैं तो एकाग्रता बढ़ती है। जो सांसारिक सुखों से अनुभव नहीं होता, वह एक योगी करता है। स्वयं को स्वस्थ करें, परिवार को सुखी करें और राष्ट्र को सशक्त करें। ब्रह्माकुमारीज़ ने पूरे विश्व में अध्यात्म के द्वारा जो योग का शंखनाद किया है आज वह बदलाव की क्रांति बन गया है। यहां आना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।



ब्रह्माकुमारीज ऑस्ट्रेलिया एंड एशिया के रीजनल डायरेक्टर ब्रह्माकुमार चार्ली हॉग ने कहा कि जब लंदन में ब्रह्माकुमारीज़ से मिला, तो मुझे केवल परमात्मा शिव बाबा का ही परिचय नहीं मिला, बल्कि मेरा पूरा जीवन बदल गया। मैं सुबह ब्रह्ममुहूर्त में उठता हूं। रोज राजयोग मेडिटेशन करता हूं। राजयोग का ज्ञान लेने के बाद मेरा जीवन पूरी तरह से सकारात्मक बन गया। आज पूरे विश्व के लिए राजयोग मेडिटेशन भारत का महान उपहार है। आप सभी एक बार जीवन में इसका प्रयोग करके देखें।





वैश्विक शिखर सम्मेलनः दूसरा दिन (प्लेनरी सेशन-2)

आपसी सहयोग, प्यार, भाईचारा से ही नई दुनिया का होगा निर्माण : राजयोगिनी चक्रधारी दीदी

रुस- जर्मनी से आए वक्ताओं ने रखे अपने विचार



» महाराष्ट्र के आकार फाउंडेशन की 108 महिला गायकों द्वारा एक स्वर में आध्यात्मिक गीतों की मंत्रमुग्ध कर देने वाली प्रस्तुति दी गई।

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

वैश्विक शिखर सम्मेलन के दूसरे प्लेनरी सेशन सेकंड में जर्मनी, रुस से आए वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। सह निर्माण से नई दुनिया का निर्माण विषय पर आयोजित इस सेशन में रूस में ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका राजयोगिनी बीके चक्रधारी दीदी ने कहा आप विश्व की विशिष्ट आत्माएं हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अनेक लोगों से संपर्क-संबंध होता है। आप तीन दिन से जो यहां सुन रहे हैं, वह श्रेष्ठ मान्यताएं और किसी अन्य तक अवश्य पहुंचाएं। आज संसार में चारों ओर झगड़े और लड़ाइयां हैं। प्रकृति अपना प्रकोप दिखा रही है। ये देखकर हम संसार की हालत समझ सकते हैं। यह सब देखकर हमको लगता है दुनिया का रूप बदलना चाहिए। आपसी सहयोग, प्यार, भाईचारा से ही नई दुनिया का निर्माण होगा। जर्मनी से आए पर्यावरण कार्यकर्ता एवं बीके गोलो जे. पिल्ज़ ने कहा कि वर्ष 2009 से ब्रह्माकुमारीज़ संयुक्त राष्ट्र के अधिकांश जलवायु सम्मेलनों के साथ संयुक्त राष्ट्र के अन्य सम्मेलनों में भी भाग ले रही है। इनमें प्लास्टिक-मुक्त जीवनशैली को बढ़ावा देते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखें, तो इस समस्या के समाधान का एक हिस्सा स्वयं के साथ हमारे संबंध में निहित है।



आज दुनिया बहुत कठिन दौर से गुजर रही है

भारत सरकार पर्यटन मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव एवं महानिदेशक आईएएस सुमन बिल्ला ने कहा कि आज दुनिया बहुत कठिन दौर से गुजर रही है। वर्तमान समय में ऐसा प्रतीत होता है कि जिसकी लाठी, उसकी भैंस' का सिद्धांत स्थापित हो रहा है। कुछ देश अपने संकीर्ण राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दे रहे हैं और वैश्विक शांति तथा मानवता के सिद्धांतों को बनाए रखने की दिशा में पर्याप्त प्रयास नहीं कर रहे हैं। हम ऐसे दौर से भी गुजर रहे हैं, जिसमें आर्थिक व्यवस्था तेजी से बदल रही है। इससे पूरी दुनिया में किसी न किसी रूप में असंतोष बढ़ रहा है।

इन्होंने भी किया संबोधित-

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके शशि दीदी, दिल्ली की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी बीके पुष्पा दीदी, गुवाहाटी के एएम टेलीविजन एंड सिनेमा एवं पराग न्यूज़ के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजीव नारायण, मुंबई के वरिष्ठ सर्जिकल ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. अशोक मेहता, नोएडा से आए वरिष्ठ पत्रकार राधेश्याम राय, लव माय इंडिया, वाटर कम्युनिकेशंस एवं अर्थ फिल्म्स, संस्थापक वंदना सेठी, ने भी अपने विचार व्यक्त किए।



» वैश्विक शिखर सम्मेलन में भारत सहित कई देशों से छह हजार से अधिक नामचीन हस्तियों ने शिरकत की।

जयपुर से आए सुप्रसिद्ध ज्योतिषी लवभूषण ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ ने मेरे जीवन को बदला है। आश्रम की दीदियां हमेशा कहती थीं कि आप हमेशा मुस्कुराइए, चाहे कैसी भी परिस्थिति हो। आज मेरे चेहरे पर जो मुस्कान है, वह ब्रह्माकुमारीज़ की देन है। 90 वर्षों की यात्रा में ब्रह्माकुमारीज़ ने जो किया है, उसके लिए पूरा विश्व आपका ऋणी रहेगा। जब मैंने यहां शांतिवन में पहला कदम रखा, मेरे रौंगटे खड़े हो गए। मेरी आंखों से आंसू आ गए। मैंने संकल्प लिया कि हमेशा यहां आऊंगा और भी लोगों को यहां से जोड़ने का प्रयास करुंगा।



सरदार कृषिनगर विश्वविद्यालय दंतीवाड़ा गुजरात के कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल ने कहा कि पिछले एक दशक से प्राकृतिक खेती मेरा विषय रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से विश्व परिवर्तन की बात हो रही है। हमें भूमि का भी परिवर्तन करना है। जिस तरह से हमारे संस्कारों का ह्रास हुआ है। उसका असर सब तरफ पड़ा है। ब्रह्माकुमारीज़ के फार्मिंग को देखकर अत्यंत आनंदित हुआ। बिना कीटनाशक के प्राकृतिक खेती यहां हो रही है। हमने ब्रह्माकुमारीज़ के साथ एमओयू किया है। यहां के साधना और राजयोग के प्रयोग हम भी करेंगे।



जोधपुर के कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. वीएस जाटावत ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ विश्व में मानव मूल्यों का संदेश पहुंचा रही है। एक शिक्षाविद् के रुप में मानता हूं कि शिक्षा और आध्यात्मिकता एक-दूसरे के पूरक हैं। छात्रों को केवल तकनीक की जानकारी ही नहीं बल्कि मानवता और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना है। तीन दिन के राजयोग के अनुभव ने हमें यह सिखाया है कि विश्व बदलने के पहले हमें स्वयं को बदलना होगा।



ग्रैमी अवार्ड विजेता रिकी केज और पार्टी ने बांधा समां









श्रेष्ठ संकल्पों से असंभव को भी संभव बनाया जा सकता हैः शिवानी दीदी



अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने अवेकनिंग द सेल्फ विषय पर संबोधित करते हुए सकारात्मक सोच, श्रेष्ठ संकल्पों और आंतरिक शक्ति के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हमारी सोच, स्वभाव, निर्णय और संस्कार हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं। इसलिए स्वयं में सकारात्मक परिवर्तन लाने की जिम्मेदारी हमारी स्वयं की है। दूसरों की नकारात्मक बातों को बार-बार दोहराने के बजाय उनके प्रति भी शुभभावना और श्रेष्ठ संकल्प रखने चाहिए। इससे मन शांत, स्थिर और शक्तिशाली बनता है। सभी को समानता की दृष्टि से देखने, रिश्तों में विश्वास बनाए रखने, सबको क्षमा करने और हर परिस्थिति में खुश रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने श्रेष्ठ संस्कारों एवं कर्मों के माध्यम से स्वयं में परिवर्तन लाकर स्वर्णिम भारत के निर्माण तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को साकार करने का संदेश दिया। सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास, श्रेष्ठ कर्म और परमात्मा की शक्तियों के सहारे कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।

ब्रह्माकुमारीज पूरे विश्व में लोगों का जीवन बदल रही है



अमृता विद्यालयम दिल्ली की प्राचार्य ब्रह्मचारिणी चिन्मयामृता चैतन्या ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पूरी दुनिया के लिए एक नजीर है कि कैसे हम विचारों को सकारात्मक रुप से बदलकर अपना जीवन बदल सकते हैं। यदि हमें स्वयं को बदलना है तो अपने आत्म स्वरुप को जानना होगा। अध्यात्म से ही दुनिया में शांति आएगी। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पूरे विश्व में राजयोग मेडिटेशन से लोगों का जीवन बदल रही है। हम सभी को मिलकर भारत की आध्यात्मिक धरोहर अध्यात्म को विश्व के सामने लाने और प्रत्यक्ष करने की जरुरत है। दुनिया में प्रेम से ही बदलाव लाया जा सकता है। यहां आकर बहुत खुशी हुई।

यहां आकर असली पहचान मिली



प्रसिद्ध सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर कुलदीप सिंघानिया ने कहा कि यह ज्ञान अवेकनिंग विद ब्रह्माकुमारीज़ से मिला। ब्रह्माकुमारीज़ को, शिवानी बहन जितना धन्यवाद दूं, कम है। हमारी असली पहचान मिली, सेल्फ रियलाइजेशन मिली। यहां अब पवित्र, प्रेम से भरी आत्माएं हैं। यहां आकर हमारा आध्यात्मिक डिटॉक्स हो जाता है। किसी ने जीने का रास्ता दिखा दिया, जितने भी जेन जी है, उनका माइंडसेट पैसा कमाना है, लेकिन यहां आकर सीखा कि पैसों से ऊपर भी कुछ है।

महिला सम्मान का सबसे बड़ा कार्य



सेल्फी विद डॉटर अभियान के संस्थापक सुनील जगलान ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान महिला सशक्तिकरण का दुनिया का सबसे बड़ा उदाहरण है। महिला सम्मान का सबसे बड़ा कार्य यहां हो रहा है। सारे देश की सरकारों को ब्रह्माकुमारीज़ का साथ मिल जाए तो पूरी दुनिया की दिशा और दशा ही बदल जाएगी। यहां से जुड़ने के बाद मेरी जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है। यहां से मेंटल हेल्थ को ठीक किया जाता है।



मैं यहां सीखने आया हूं...



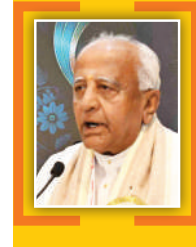
ग्लोबल पीस फाउंडेशन एवं इंडो-पैसिफिक पीस फोरम के अध्यक्ष डॉ. मार्कंडेय राय ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का उद्देश्य ही है एक विश्व एक परिवार, जो मानवता के लिए बहुत आवश्यक है। मैं यहां सीखने आया हूं। मैं इस सकंल्प से आया हूं कि ब्रह्माकुमारीज़ हमें जो भी सेवा देंगी, हम करेंगे। हमें अपनी शिक्षा नीति पर कार्य करना है। हमें खुद शांति से पूर्ण होना होगा, तब ही शांति और सद्भाव आएगा।

ब्रह्माकुमारीज़ से सभी को शांति का संदेश सीखने की जरूरत है



अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा, पर्यटन एवं ग्रामीण विकास मंत्री पासांग दोरजी सोना ने कहा कि मैं पहली बार यहां आया हूं और यहां आकर ऐसा महसूस हुआ कि मुझे सप्ताहभर रहना चाहिए था। यहां के लोगों के जीवन में जो सुकून और शांति महसूस होती है, वह अपने आप में सीखने लायक है। आज जो देश में हालात चल रहे हैं, ऐसे समय में ब्रह्माकुमारीज़ से लोगों को सीखने की जरुरत है। मैंने अपने मंत्रालय में लीडरशिप सिखाने के लिए ब्रह्माकुमारी दीदियों को आमंत्रित किया और बहुत लाभ हुआ है।

अध्यात्म जरूरी है



श्री सत्य साईं मानव उत्कृष्टता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बीएन नरसिम्हा मूर्ति ने कहा कि यहां आकर एक नई ही दुनिया की अनुभूति हो रही है। अध्यात्म और योग की ताकत से ही दुनिया बदलेगी। परमात्मा एक, विश्व एक परिवार का संदेश ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्वभर में दिया जा रहा है। आज हम सभी को अध्यात्म से जुड़ने की जरुरत है। यहां से डिवाइन संदेश दिया जा रहा है।

पर्यावरण संरक्षण के कार्य के लिए ब्रह्माकुमारीज़ बधाई की पात्र है



कल्पतरु संस्थान के संस्थापक विष्णु लाम्बा को गार्डियन ऑफ ह्यूमैनिटी सम्मान प्रदत्त किया गया। इस अवसर पर लाम्बा ने कहा कि चम्बल के कुख्यात डकैत पंचम सिंह ने मुझे बताया कि ब्रह्माकुमारी बहनों की प्रेरणा से डकैती छोड़कर मुख्यधारा में आया। मैं बहुत प्रभावित हुआ। मैं आपसे प्रार्थना करना चाहता हूँ कि पर्यावरण संरक्षण की बात है, मंच से हो रही है, लेकिन पूरी जिंदगी पर्यावरण संरक्षण में जीवन लगाने वालों का एक सम्मेलन यहां करवा दीजिए। लोगों को मधुबन की इस भूमि पर होने वाले पर्यावरण संरक्षण का कार्य सबको दिखाना चाहिए। यहां सौर ऊर्जा से भोजन बनता है, यहां कचरा रिसाइकल हो रहा है, आप सभी देखकर जाना। पर्यावरण संरक्षण के कार्यों के लिए ब्रह्माकुमारीज़ बधाई की पात्र है।



» ब्रह्माकुमारीज़ में देश-विदेश में समर्पित रुप से 50 से अधिक वर्ष से सेवाएं दे रहे ब्रह्माकुमार भाई-बहनों का वैश्विक शिखर सम्मेलन के स्वागत सत्र में विशेष रुप से पगड़ी, माला पहनाकर सम्मान किया गया।

इंदौर की कुमारियों ने दी मनमोहक प्रस्तुति







» इंदौर से आईं शक्ति निकेतन छात्रावास की कुमारियों ने सम्मेलन में एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।



» माउंट आबू स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल की डॉक्टर्स व नर्स की टीम ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।

झलकियां.... जो यादों में बस गईं



» पुणे की युगंधर वाद्यपथक ढोल-ताशा पार्टी ने जोरदार प्रस्तुति दी।



» कलाकारों ने राधा-श्रीकृष्ण की प्रस्तुति से मन मोह लिया।



» सागर से आए कलाकारों ने बुंदेली गीतों पर जोरदार प्रस्तुति दी।



» पुणे की युगंधर वाद्यपथक ढोल-ताशा पार्टी ने जोरदार प्रस्तुति दी।

संपादकीय

ईमानदारी : जीवन की सबसे अनमोल पूंजी

मनुष्य के जीवन में अनेक मूल्य हैं, जो उसके व्यक्तित्व को सुंदर और समाज में सम्माननीय बनाते हैं। इनमें ईमानदारी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ईमानदारी केवल सच बोलने या किसी के साथ छल न करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी सोच, व्यवहार, कार्यशैली और संकल्पों की पवित्रता का भी परिचायक है। ईमानदार व्यक्ति का मन भीतर से स्वच्छ और निर्भय रहता है। आज के प्रतिस्पर्धा भरे वातावरण में कई बार मनुष्य सफलता और प्रतिष्ठा पाने की जल्दबाजी में अपने मूल्यों से समझौता कर लेता है। कभी अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के परिश्रम का श्रेय लेता है, तो कभी अपनी कमियों को छिपाने के लिए दूसरों पर दोषारोपण करता है। कुछ समय के लिए ऐसे व्यवहार से लाभ दिखाई दे सकता है, लेकिन इससे व्यक्ति का विश्वास और विश्वसनीयता धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है। सच्ची ईमानदारी वह है, जब व्यक्ति कोई गलती होने पर उसे स्वीकार करने का साहस रखे, किसी की अनुपस्थिति में भी उसके प्रति न्यायपूर्ण रहे और अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा से करे। उसे अपनी उपलब्धियों का श्रेय लेने के साथ-साथ दूसरों के योगदान को स्वीकार करने में भी संकोच नहीं होना चाहिए। आध्यात्मिक दृष्टि से ईमानदारी का संबंध आत्मा की आंतरिक पवित्रता से है। जब मनुष्य परमात्मा को साक्षी मानकर प्रत्येक कर्म करता है, तब उसके भीतर सत्यनिष्ठा और जिम्मेदारी का भाव स्वतः जागृत होने लगता है। उसे यह स्मृति रहती है कि संसार से कुछ छिपाया जा सकता है, लेकिन अपने अंतर्मन से कुछ नहीं छिपाया जा सकता।

बोध कथा/जीवन की सीख

कुर्सी को बचाते-बचाते वह खुद छोटा हो गया

एक राज्य में एक व्यक्ति को मंत्री के रूप में किसी विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई। वह अपने विभाग के सहकर्मियों से सबसे मुस्कराकर मिलता, मीठे शब्दों में बात करता और सामने वाले को ऐसा एहसास कराता, जैसे उससे अधिक शुभचिंतक कोई नहीं। लेकिन उसके मन में हर समय एक अदृश्य हिसाब चलता रहता था- कौन



कितना आगे बढ़ रहा है, किसकी प्रशंसा हो रही है और कहीं कोई उसकी जगह लेने की तैयारी तो नहीं कर रहा? विभाग का कोई साथी अच्छा काम कर लेता तो वह मुस्कराकर बधाई देता, लेकिन भीतर ही भीतर बेचैन हो जाता। धीरे-धीरे वह उस साथी की छोटी-छोटी कमियां खोजने लगता। कभी किसी की बात ऊपर तक पहुंचाता, कभी किसी के काम में अनावश्यक हस्तक्षेप करता और कभी दूसरों की मेहनत को अपनी उपलब्धि बताकर प्रस्तुत करता।

एक दिन राज्य में एक अनुभवी माली आया। उसने विभाग के बाहर लगे सुंदर पौधों को देखकर कहा- बहुत अच्छी बगिया है। वह मंत्री गर्व से बोला- इसकी पूरी देखरेख मैं करता हूं। माली ने सहजता से पूछा- लेकिन इन पौधों को पानी कौन देता है? मंत्री ने कहा- मेरे सहयोगी भी हाथ बंटाते हैं। माली मुस्कराया और बोला- एक बात कहूं? बगिया का माली वह नहीं होता जो हर फूल को अपने नाम से पहचाने, बल्कि वह होता है जो हर पौधे को खिलने का अवसर दे। जिस माली को डर हो कि कहीं दूसरा पौधा उससे ऊंचा न हो जाए, वह बगिया नहीं, अपनी परछाई उगाता है। कुछ देर रुककर माली ने कहा- और सुनिए, कुर्सी पर बैठने वाला व्यक्ति ऊंचा नहीं होता। उसकी ऊंचाई इस बात से तय होती है कि उसके कारण कितने लोग आगे बढ़ पाए। जो हर समय अपनी जगह बचाने में लगा रहता है, वह अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए जगह ही नहीं छोड़ता है। उस दिन मंत्री को पहली बार लगा कि वह दूसरों से नहीं, अपने ही भय से लड़ रहा है।

संदेश: दूसरों की सफलता आपकी असफलता नहीं है। किसी का सम्मान कम करके अपना सम्मान नहीं बढ़ाया जा सकता। मीठी वाणी तभी सार्थक है, जब मन में भी उतनी ही स्वच्छता हो। पद की सुरक्षा दूसरों को कमजोर करने से नहीं, अपने व्यक्तित्व को इतना श्रेष्ठ बनाने से होती है कि लोग आपके साथ काम करना सम्मान समझें। याद रखिए, कुर्सी एक दिन किसी और की हो सकती है, लेकिन आपके व्यवहार से बनी पहचान जीवनभर आपके साथ रहती है।



मेरी कलम से

धनशेकरन रंगास्वामी (57)
फिजियोथैरेपिस्ट,
बैंगलुरु, कर्नाटक

परमात्मा ज्ञान और राजयोग से 32 साल पुरानी शराब की लत छूट गई

मां के प्रयासों से बदला जीवन, अब ईश्वरीय नशे में रहता हूं

शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।

मैं जब 17 साल का था और कॉलेज में पढ़ने गया तो शराब पीने की आदत लग गई। धीरे-धीरे यह आदत इतनी बढ़ गई कि रोजाना 10 से 12 क्वार्टर शराब पीने लगा। शराब की लत से मेरे परिवार वाले तंग आ गए। नशे में मैं अपनी पत्नी के साथ मारपीट करता था तो आठ साल से वह अलग रह रही है। सुबह होते ही शराब पीना और नॉनवेज खाना मेरी दिनचर्या बन गई थी। मैं इतना नशा करता था कि पुलिस वाले तक मुझसे डरते थे और थाने में लेना जाना छोड़ दिया था। मैं मेंटली डिसआर्डर हो गया था। नशे के कारण दवाइयां तक काम नहीं करती थीं। मेरी माता पिछले 38 साल से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी हैं और यहां के सभी नियम-मर्यादाओं का पालन करते हुए नियमित राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करती हैं। उन्होंने कई बार प्रयास किया, मुझे सेंटर लेकर गईं कि मेरी शराब छूट जाए। लेकिन मैं शराब की लत में इतना डूब गया था कि उसके अलावा कुछ दिखाई नहीं देता था।

तीन साल पहले की बात है। मेरी मानसिक और शारीरिक स्थिति बेहद नाजुक हो गई थी। परिवार वालों ने मान लिया था कि अब मैं नहीं बचूंगा। इस पर मेरी मां ने फिर से मुझे सुधारने का प्रयास किया और मेरे मना करने के बाद भी मुझे ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र लेकर पहुंचीं। मां मुझे लगातार रोजाना दो माह तक सेवाकेंद्र लेकर गईं। इससे यह हुआ कि पहले जहां मैं रोजाना 10 से 12 क्वार्टर शराब पीता था तो वह धीरे-धीरे कम होने लगी। पहले 12 से दस हुईं, फिर आठ, छह, दो क्वार्टर और एक क्वार्टर पर आ गया। फिर मैंने संकल्प किया कि अब से दस दिन शराब नहीं पीएंगे। जब वह संकल्प पूरा हो गया तो फिर मैंने एक माह, दो माह तक शराब और नॉनवेज से दूर रहने का संकल्प किया। इस तरह ब्रह्माकुमारी दीदियों की लगातार काउंसलिंग, समझाइश और परमात्म ज्ञान से प्रेरणा मिलती गई और मेरी शराब की लत और नॉनवेज खाना हमेशा के लिए छूट गया।

अब लगता है कि मैं स्वर्ग में आ गया हूं... तीन साल पहले जब माउंट आबू से नशामुक्त भारत अभियान चलाया गया तो मुझे एक साल तक दिन-रात सेवा करने का मौका मिला। जब लोगों के बीच गया और ब्रह्माकुमार भाई-बहनें नशामुक्ति पर क्लास कराते, ज्ञान देते तो मुझे अंदर से लगता था कि मैंने जीवन के इतने साल नशे में खराब कर दिए। मैं कितना बेवकूफ था। लेकिन परमात्मा का ज्ञान मिलने के बाद अब लगता है कि मैं स्वर्ग में आ गया हूं। शराब का नशा छोड़ अब ईश्वरीय नशे में रहता हूं कि मुझे परमात्मा शिव बाबा मिल गए। रोज ब्रह्ममुहूर्त में 3.30 बजे उठकर राजयोग ध्यान करता हूं। सारा दिन ईश्वरीय सेवा में व्यतीत होता है। अब मेरे जीवन का उद्देश्य है कि सभी नशामुक्त हों और शारीरिक रूप से स्वस्थ हों।

परमात्मा सत्ता का नैसर्गिक विहंगम परिवेश और परिदृश्य



जीवन का मनोविज्ञान

भाग - 101

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

आबू रोड (राजस्थान)।

आत्म तत्व का पवित्र स्वरुप, परमात्म संबंधों के अंतर्गत अभिवृद्धि प्रदान करने में सहायक होता है, जिससे जीवात्मा स्वयं की गहन अनुभूतियों से परमसत्ता के प्रति नैसर्गिक अनुराग से युक्त श्रद्धा, आस्था एवं मान्यता का समावेश, आत्मानंद को सम्पूर्णता के साथ सम्पन्नता की गुणात्मकता से सम्बद्ध कर देता है। चेतना की चैतन्यता से सराबोर मनःस्थितियां मानवीय संवेदना को अत्यधिक सम्मानजनक स्थितियों में स्थापित कर देती है, जिसकी परिणिति आत्मिक संबंधों से ईश्वरीय सत्ता के समग्र स्वरुप का दिग्दर्शन है जिसमें आत्मानुभूति से परमात्मानुभूति की दिशा में अग्रसर होते हुए परमानंद की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। आत्मिक प्रेम की शर्त रहित प्रगाढ़ता ही सम्पूर्ण मानव आत्माओं के मध्य स्वयं की जीवंत उपस्थिति द्वारा चेतना के उच्च स्वरुप की अनुभूति को स्वीकार करती है जिसमें परमात्म शक्ति की प्रेममयी पराकाष्ठा को प्राप्त करने का भाव एवं विचार, विशुद्ध रुप से आत्मगत स्वरुप परिमार्जित हो जाता है।

आत्मिक स्वभाव के विशुद्ध पवित्रतम परिवेश

कर्म क्षेत्र के क्रियान्वयन की दिशा में एकाग्रता और समर्थ संकल्प की सुनिश्चितता आत्मा को शक्तिशाली बना देती है, क्योंकि धारणा का अनुसरण करने से परिवर्तन की सार्थकता निर्धारित हो जाती है तथा आत्मा सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ आत्मिक स्वभाव के प्रति निष्ठावान होकर पवित्रतम परिवेश का निर्माण विधिवत रुप से सम्पन्न कर देती है। आत्म ज्ञान, योग, धारणा एवं सेवा की उच्चता को आत्मसात करने के लिए तीव्र पुरुषार्थ की अनिवार्य आवश्यकता होती है, जो चेतना को परिमार्जन और परिष्कृत करने में पूर्णतः सहायक बनकर आत्मिक स्वभाव एवं संस्कार के श्रेष्ठतम मानदंड को स्थापित करने में विशिष्ट भूमिका के निर्वहन को महत्व प्रदान करती है। पवित्रतम परिवेश के निर्माण में स्वाध्याय से मनन-चिंतन की उपयोगिता, आत्मा की त्रिविध शक्तियों मंशा, वाचा एवं कर्मणा के विशुद्ध स्वरुप से निर्धारित होकर समय, संकल्प, सम्बन्ध एवं स्वप्न की पवित्रता को रेखांकित करते हुए सर्व आत्माओं के कल्याण और उत्थान हेतु सूक्ष्म मंशा सेवा को बढ़ाते हुए तीव्र स्वरुप में क्रियान्वयन किया जाना आवश्यक होता है।

आत्मिक स्वभाव के पवित्रतम परिवेश में परिवर्तन की अर्न्तदृष्टि को विकसित करके ही आत्महित को सम्पूर्णता के स्वरुप में सम्पन्नता की धरोहर को निर्मित किया जा सकता है, जिसमें जीवात्मा समृद्धि को नैसर्गिक स्वरुप से जीवन के व्यापक संदर्भ एवं प्रसंग में अभिव्यक्त करती है। व्यक्त से अव्यक्त का अनहद आनंद स्वयं को आत्मज्ञान से सुख-शांति, आनंद, प्रेम, पवित्रता एवं शक्ति द्वारा भरपूर कर देता है जिससे आत्म जगत श्रेष्ठ , संस्कारगत स्वरुप में सहजता से परिणित होकर आत्मिक स्वभाव के पवित्रतम् परिवेश में रुपान्तरित हो जाता है।

ईश्वरीय सत्ता का नैसर्गिक विहंगम परिदृश्य

परमात्म सत्ता की विराटता का स्वरुप जगत, कल्याण के अर्थ में मंगलकारी विहंगम परिदृश्य से सम्पूर्ण रुप से पोषित, पल्लवित एवं पुष्पित होता हुआ पुलकित-परिवेश के सानिध्य द्वारा गतिमान रहता है, जिसमें जीवात्मा स्वयं को अलौकिक शक्तियों एवं गुणों से भरपूर करती है तथा चेतना की पवित्र अनुभूतियां स्वयं को ईश्वरीय सत्ता के सानिध्य से स्वत: ही सम्बद्ध कर देती है। ईश्वरीय कृपा दृष्टि की अनुभूति का विहंगम परिदृश्य सदैव आत्मगत चेतना को स्वयं के अस्तित्व बोध से मर्यादित आचरण की अभिव्यक्ति को साकार करने के निमित्र बन जाता है, जिसमें परमात्म सत्ता के नैसर्गिक स्वरुप का सृजनात्मक पक्ष क्रियान्वित होकर गतिशील बना रहता है। चेतना की चैतन्यता को सदा उच्चतम स्तर पर पहुंचाने हेतु निष्पक्ष चिंतन द्वारा निरंतर पवित्र भाव एवं विचार की गुणात्मक उत्पत्ति को बनाए रखने हेतु आत्मिक उन्नति के परिष्कृत आयाम का निर्माण विभिन्न स्थितियों के अन्तर्गत निर्धारित करके आत्मगत महानता की ओर गतिशील करने की जिजीविशा ईश्वरीय सत्ता के विहंगम परिदृश्य का अद्भुत परिणाम है। स्वयं के सानिध्य में सर्व मानव आत्माओं को ऊंचाई के मार्ग से महानतम स्वरुप की ऊंचाई पर स्थापित कर देने के जीवन पर्यन्त किए जाने वाले पुरुषार्थ की मनोभूमि में आधारभूत सत्यनिष्ठा से परिपूर्ण मन, वचन एवं कर्म की गुणात्मकता से सम्पन्न अन्तर्मन की पुनर्जीवित अनवरत जीवंतता ही चेतनता का मूलभूत स्रोत है जो परमपिता के वृद्ध स्वरुप में मददगार बनकर सृष्टि के सम्पूर्ण प्राणी जगत में प्राण फूंककर सदा ही आशा एवं विश्वास का संचार करते रहते हैं। आत्मिक परिवेश द्वारा विभिन्न स्थितियों में भी स्वयं के साथ-साथ परमेश्वर पर अगाध श्रद्धा, आस्था एवं विश्वसनीय मान्यता के सानिध्य से जगत में जीवात्मा की पवित्रता से आत्मगत रुप में आरम्भ से लेकर अंतिम श्वास तक विजयी बन जाने हेतु अपेक्षित भगीरथ आध्यात्मिक पुरुषार्थ के जतन से सम्पूर्ण, सम्पन्न अर्थात् पवित्र स्वरुप बन जाना ईश्वरीय सत्ता के विहंगम परिदृश्य का चमत्कारिक और आनंदमयी पक्ष है।



हम जैसा व्यवहार अपने लिए दूसरों से चाहते हैं, ठीक वैसा ही व्यवहार हमें दूसरों के साथ करना चाहिए।

- ईसा मसीह, संस्थापक, ईसाई धर्म



मंजिल को पाने की दिशा में आगे बढ़ते हुए याद रहे कि मंजिल की ओर बढ़ता रास्ता भी उतना ही नेक हो।

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद, प्रथम राष्ट्रपति

द मिलेनियम स्कूल्स में ब्रह्माकुमारीज़ पांच साल तक चलाएगी डिजिटल वेलनेस अभियान, एमओयू साइन

देशभर के मिलेनियम स्कूलों में बनेंगे मेडिटेशन रूम

शिव आमंत्रण, गुरुग्राम, हरियाणा।



विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, मानसिक संतुलन और तकनीक के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देने के लिए द मिलेनियम ग्रुप ऑफ स्कूल्स और ब्रह्माकुमारीज़ एजुकेशन सोसाइटी के बीच पांच वर्षीय समझौता (एमओयू) हुआ। दिशा नामक इस परियोजना का शुभारंभ गुरुग्राम स्थित ओम शांति रिट्रीट सेंटर में किया गया।

इस अवसर पर ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी बीके आशा दीदी तथा द मिलेनियम ग्रुप ऑफ स्कूल्स के रणनीतिक योजना एवं संचालन निदेशक कुलकीर्ति दीवान उपस्थित रहे। यह पहल देशभर में समूह के सभी विद्यालयों में लागू होगी।

परियोजना के तहत विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ नैतिक मूल्यों, एकाग्रता, तनाव प्रबंधन, आत्म-विकास और डिजिटल वेलनेस की शिक्षा दी जाएगी। सभी मिलेनियम स्कूलों में राजयोग ध्यान कक्ष स्थापित किए जाएंगे, जहां विद्यार्थी और शिक्षक ध्यान एवं व्यक्तिगत परामर्श का लाभ ले सकेंगे।

साथ ही शिक्षण एवं गैर-शिक्षण कर्मचारियों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित होंगे। अभिभावकों के साथ प्रत्येक तीन महीने में संवाद सत्र भी होंगे, जिनमें पारिवारिक वातावरण, बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास और तकनीक के संतुलित उपयोग पर चर्चा की जाएगी।

इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान के साथ मानसिक एवं भावनात्मक रूप से सशक्त बनाना और जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करना है।



विराटनगर की हीरक जयंती मनाई

विराटनगर, नेपाल। ब्रह्माकुमारी राजयोग सेवा केन्द्र, विराटनगर धरान की स्थापना के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में हीरक जयंती (डायमंड जुबली) समारोह एवं विश्व कल्याण ज्ञान सरोवर परिसर का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। इसमें कोशी प्रदेश के मुख्यमंत्री हिकमत कुमार कार्की, नेपाल की निदेशिका राजयोगिनी डॉ. राज दीदी, माउंट आबू से पधारे डॉ. बनारसी लाल, सह-निदेशिका बीके किरण दीदी, कोशी प्रदेश की प्रमुख बीके गीता दीदी, बीके रामसिंह भाई मुख्य रूप से मौजू रहे।

वरदानी भवन का शुभारंभ

सटई (छतरपुर)। किशोर सागर तालाब स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित सेवाकेंद्र वरदानी भवन का उद्घाटन छतरपुर सबजोन की निदेशिका राजयोगिनी बीके शैलजा दीदी ने दीप प्रज्वलित कर किया। समारोह में जिले के विभिन्न तहसीलों के सेवाकेंद्रों से ब्रह्माकुमारी बहनें उपस्थित रहीं। इनमें बीके विद्या दीदी, बीके नंदा दीदी, बीके आशा दीदी, बीके रमा दीदी, बीके रजनी दीदी, बीके रेखा दीदी, बीके मंजू दीदी, बीके सुलेखा दीदी, पूर्व नपा सीएमओ निरंकार पाठक मुख्य रूप से मौजूद रहे।



मीडिया सेमीनार : मूल्यनिष्ठ मीडिया : समय की आवश्यकता विषय पर आयोजन

लोकमंगल की भावना से युक्त पत्रकारिता समय की आवश्यकता



शिव आमंत्रण, जबलपुर, मप्र। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शिव उपहार भवन, प्रेमनगर में मीडिया प्रभाग द्वारा मूल्यनिष्ठ मीडियाः समय की आवश्यकता विषय पर पत्रकारों के लिए सेमीनार आयोजित किया गया। इसमें प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के प्रतिनिधियों ने समाज पर मीडिया के सकारात्मक प्रभाव को लेकर विचार साझा किए। मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ मीडिया प्रभाग की क्षेत्रीय समन्वयक बीके विमला दीदी ने कहा कि मीडिया देश की वाणी और मस्तिष्क है। पत्रकारिता में सत्य, शुद्धता और निष्पक्षता आवश्यक है।

माउंट आबू से आए मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक बीके डॉ. शांतनु भाई ने कहा कि मीडिया समाज की चेतना को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण शक्ति है। ऐसे आयोजन अनुभवों के आदान-प्रदान और सामाजिक चुनौतियों पर सार्थक संवाद का अवसर देते हैं। दैनिक भास्कर के सिटी चीफ प्रेमशंकर तिवारी ने कहा कि पत्रकारिता का उद्देश्य वंचितों को न्याय दिलाना, अंधेरों में दीप जलाना और समाज को सही दिशा देना होना चाहिए। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर के पूर्व कुलपति प्रो. डॉ. मानसिंह परमार ने कहा कि लोकमंगल की भावना से युक्त पत्रकारिता वर्तमान समय की आवश्यकता है। नई दुनिया के संपादक उज्ज्वल शुक्ला ने कहा कि पाठकों को सकारात्मक विचारों के लिए प्रेरित करना मीडिया की जिम्मेदारी है।

पत्रिका के संपादक शुभम बघेल, प्रदेश टुडे के संपादक पवन पांडे, आकाशवाणी के श्याम टहलानी एवं स्वतंत्र मत के संपादक राजेन्द्र मिश्रा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। महर्षि नारद के संवादों पर आधारित नृत्य-संगीतमय नाटिका ने सभी का मन मोह लिया। कुमारी अविका ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। संचालन बीके विजय भाई ने किया।



शिव आमंत्रण, जयपुर। डीएवी शताब्दी पब्लिक स्कूल में भारत विकास परिषद, उत्तर पूर्व प्रांत एवं आर्य युवा समाज द्वारा आयोजित 501 कुंडीय संस्कार महायज्ञ में ब्रह्माकुमारीज़ की सबजोन निदेशिका राजयोगिनी सुषमा दीदी एवं राजयोगिनी चंद्रकला दीदी को नशामुक्ति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने सम्मानित किया।



शिव आमंत्रण, कोलकाता। भवानीपुर स्थित महानायक उत्तम कुमार उद्यान में कोलकाता पुलिस द्वारा आयोजित विजया सम्मिलनी में मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किए जा रहे आध्यात्मिक एवं सामाजिक सेवा कार्यों की सराहना की। इसमें बीके अंजलि दीदी एवं बीके चंद्रा दीदी ने सीएम को स्मृति चिंह्न प्रदान किया।



शिव आमंत्रण, झोझूकलां (हरियाणा)। डॉ. पराग पिलानिया का हरियाणा सिविल सर्विसेज में चयन होने पर आयोजित सम्मान समारोह में ब्रह्माकुमारी नीलम दीदी व ब्रह्माकुमारी रितु दीदी ने डॉ. पराग को पटका पहनाकर व ईश्वरीय सौगात भेंटकर सम्मानित किया। इस मौके पर ब्रह्माकुमार अशोक भाई, कुलदीप सांगवान, अजीत जेई भी मौजूद रहे।



शिव आमंत्रण, बिलासपुर, छग। दैनिक 'साथी संदेश' के 8वें स्थापना दिवस पर आयोजित 'पत्रकारिता का कल, आज और कल' विमर्श एवं सम्मान समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग की छत्तीसगढ़ राज्य समन्वयक एवं बिलासपुर टिकरापारा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू दीदी को सम्मानित किया गया। उन्हें योग, आध्यात्म एवं समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया।



शिव आमंत्रण, पुणे (महाराष्ट्र)। वाकड स्थित सयाजी होटल में आयोजित राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार एवं शिखर सम्मेलन 2026 में ब्रह्माकुमारी सुवर्णा दीदी को राष्ट्रीय दूरदर्शी नेतृत्व सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान आध्यात्मिक जागृति, महिला सशक्तिकरण एवं समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए सेवाओं पर सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री एवं पूर्व सांसद जया प्रदा ने प्रदान किया। इस दौरान बीके लक्ष्मी भी मौजूद रहीं।



सफलता का आधार है- परमात्मा में संपूर्ण निश्चय

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान

सच्ची सफलता केवल बाहरी साधनों, बुद्धि या पुरुषार्थ से नहीं मिलती, बल्कि परमात्मा में अटूट विश्वास और उनकी श्रीमत पर चलने से प्राप्त होती है। जब आत्मा का संबंध परमात्मा से दृढ़ हो जाता है, तब कठिन परिस्थितियां भी उसके लिए आगे बढ़ने का माध्यम बन जाती हैं।

परमात्मा में निश्चय से मिलता है आत्मिक बल

जीवन में अनेक बार ऐसी परिस्थितियां आती हैं, जब मनुष्य स्वयं को कमजोर और असहाय अनुभव करता है। कभी कार्यों में बाधाएं आती हैं, तो कभी परिस्थितियां हमारी अपेक्षाओं के विपरीत हो जाती हैं। ऐसे समय में परमात्मा में संपूर्ण निश्चय रखने वाली आत्मा घबराती नहीं है। उसे विश्वास रहता है कि परमात्मा सर्वशक्तिमान हैं और उनकी छत्रछाया में कोई भी परिस्थिति असंभव नहीं है। संपूर्ण निश्चय का अर्थ केवल परमात्मा को मानना नहीं, बल्कि हर परिस्थिति में उनकी शिक्षाओं और श्रीमत पर विश्वास रखते हुए आगे बढ़ना है। जब मन में यह दृढ़ संकल्प होता है कि परमात्मा मेरा साथी, शिक्षक और मार्गदर्शक है, तब व्यर्थ चिंताएं समाप्त होने लगती हैं। आत्मा के अंदर शांति, धैर्य और निर्णय लेने की शक्ति विकसित होती है।

निश्चय और पुरुषार्थ का सुंदर संगम-

परमात्मा में विश्वास रखने का अर्थ यह नहीं कि हम पुरुषार्थ करना छोड़ दें। बल्कि सच्चा निश्चय हमें श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देता है। परमात्मा मार्ग दिखाते हैं, शक्तियां देते हैं और हम अपने पुरुषार्थ से उस मार्ग पर आगे बढ़ते हैं। यही निश्चय और पुरुषार्थ का सुंदर संगम सफलता का आधार बनता है। परमात्मा के प्रति समर्पण रखने वाली आत्मा हर जिम्मेदारी को सहजता से निभा सकती है। उसमें किसी कार्य को लेकर भय, असमंजस या असफलता की चिंता नहीं रहती। वह हर कार्य में परमात्मा की मदद का अनुभव करती है और स्वयं को निमित्त बनाकर आगे बढ़ती है।

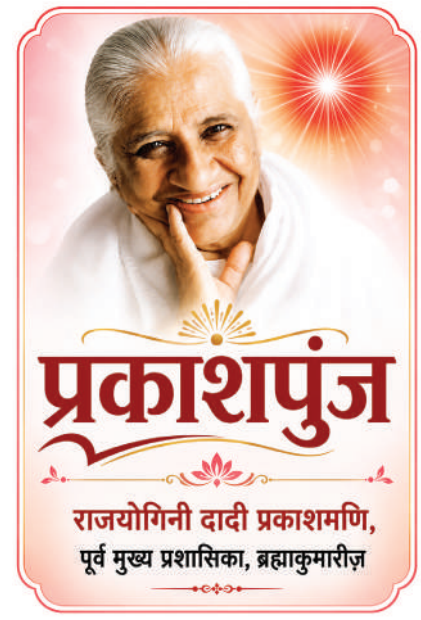
निश्चयबुद्धि आत्मा रहती है सदा निश्चिंत

जब व्यक्ति का विश्वास परिस्थितियों और परिणामों पर आधारित होता है, तब उसका मन बार-बार डगमगाता है। लेकिन परमात्मा में संपूर्ण निश्चय रखने वाली आत्मा परिणाम की चिंता छोड़कर श्रेष्ठ कर्म पर ध्यान देती है। वह जानती है कि सच्चाई, पवित्रता और ईमानदारी के मार्ग पर किया गया पुरुषार्थ कभी व्यर्थ नहीं जाता।
आइए, हम भी अपने जीवन में परमात्मा के साथ अटूट संबंध जोड़ें। प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास करें, उनकी श्रीमत को जीवन में धारण करें और हर कार्य में उनकी मदद का अनुभव करें।

... तो जीवन में सफलता स्वतः आने लगेगी

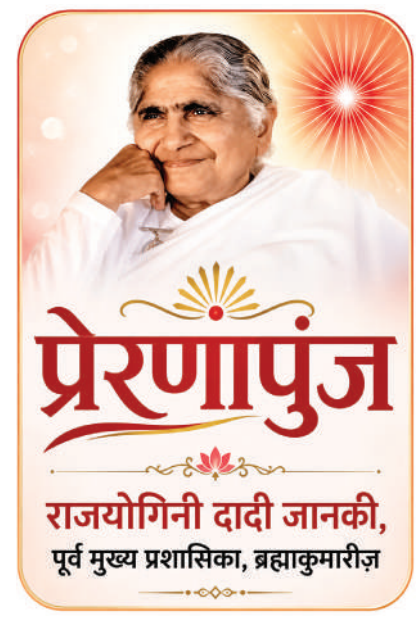
जब हमारा निश्चय अडिग होगा, तो मन में शांति, कर्मों में श्रेष्ठता और जीवन में सफलता स्वतः आने लगेगी। यही संपूर्ण निश्चय की शक्ति है, जो आत्मा को हर परिस्थिति में विजयी बनाती है। अपने जीवन की सारी जिम्मेवारियों को परमात्मा पर अर्पित करके एक छोटे बच्चे की तरह सदा हल्के रहें, निश्चिंत रहें फिर सारी जिम्मेवारी शिव बाबा की हो जाएगी। शिव बाबा कहते हैं कि जो बच्चे मेरी श्रीमत पर चलते हैं, योगयुक्त रहते हैं, सदा मेरी याद में मग्न रहते हैं तो उनके सोचने का कार्य भी मैं करता हूं।

जीवन को श्रेष्ठ बनाने के दो दिव्य आधार...



निमित्त भाव अर्थात् कर्तापन के अभिमान से मुक्त जीवन। निमित्त भाव का अर्थ है- हर कार्य में स्वयं को ईश्वर का निमित्त समझना। जब मनुष्य यह अनुभव करता है कि परमात्मा ने मुझे किसी श्रेष्ठ कार्य के लिए माध्यम बनाया है, तो उसके अंदर से मैंने किया, मेरे कारण हुआ और मुझसे ही संभव है जैसे संकल्प समाप्त होने लगते हैं। वह हर सफलता का श्रेय परमात्मा को देता है और हर परिस्थिति में स्वयं को निमित्त मानकर आगे बढ़ता है।
मैंने कभी स्वयं को कर्ता या अधिकारी नहीं समझा, बल्कि परमात्मा की श्रीमत पर चलने वाला एक सेवाधारी माना। जब व्यक्ति निमित्त बनकर कार्य करता है, तब उसमें न तो सफलता का अभिमान आता है और न ही असफलता का बोझ। सफलता मिलने पर वह स्वयं को उसका मालिक नहीं समझता और चुनौती आने पर घबराता नहीं है। उसका विश्वास रहता है कि मैं श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्म का माध्यम हूं, बाकी सब परमात्मा की शक्ति और सहयोग से संपन्न होगा। निमित्त भाव जीवन में सहजता भी लाता है।
जहां कर्तापन का भाव होता है, वहां अपेक्षाएं, अधिकार और अहंकार जन्म लेते हैं। लेकिन निमित्त भाव होने से व्यक्ति दूसरों को भी आगे बढ़ने का अवसर देता है। वह सहयोगी बनता है, नियंत्रक नहीं। यही भावना परिवार, समाज और संगठन में प्रेम तथा एकता का वातावरण बनाती है। वाणी केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारे संस्कारों और आंतरिक स्थिति का दर्पण भी है। मन में जैसी भावना होती है, प्रायः वाणी में भी वैसी ही झलक दिखाई देती है। इसलिए निर्मल वाणी के लिए केवल मीठे शब्द बोलना पर्याप्त नहीं, बल्कि मन को भी स्वच्छ और शुभ भावनाओं से भरना आवश्यक है।
हमारे शब्द किसी को निराश करने वाले नहीं, बल्कि हिम्मत और उमंग बढ़ाने वाले हों। हमारे मुख से निकला हर शब्द किसी के मन को शांति देने वाला हो, किसी का आत्मविश्वास बढ़ाने वाला हो।
निर्मल वाणी का अर्थ है- न किसी के लिए कटु शब्द, न व्यर्थ आलोचना, न निंदा और न ही किसी के सम्मान को ठेस पहुंचाने वाली बात। कभी-कभी हम सत्य बोलने के नाम पर ऐसे शब्दों का प्रयोग कर लेते हैं, जो दूसरे के मन को चोट पहुंचाते हैं। इसलिए सत्य के साथ मधुरता और स्पष्टता का संतुलन आवश्यक है। किसी की कमी बतानी भी हो तो ऐसे ढंग से बताएं कि उसे अपनी गलती सुधारने की प्रेरणा मिले, न कि अपमान का अनुभव हो।
मन को शुभ संकल्पों से भरकर और आत्मिक दृष्टि अपनाकर वाणी को शक्तिशाली बनाया जा सकता है। जब हम प्रत्येक आत्मा को उसके वास्तविक स्वरूप में देखते हैं, तो हमारे शब्दों में सम्मान और शुभभाव स्वतः आने लगते हैं। निमित्त भाव हमें अहंकार से मुक्त करता है और निर्मल वाणी संबंधों में मधुरता भरती है। एक गुण हमारे कर्मों को श्रेष्ठ बनाता है, तो दूसरा हमारे व्यवहार को सुंदर बनाता है। दोनों का अभ्यास राजयोग द्वारा सहज हो सकता है। परमात्मा की याद में रहकर जब हम स्वयं को शांत, पवित्र और शक्तिशाली आत्मा अनुभव करते हैं, तब हमारे संकल्प, बोल और कर्म में स्वतः श्रेष्ठता आने लगती है।

सच्चाई के साथ परमात्मा की शक्ति जुड़ी होती है



सच्चाई को अपनाने वाला व्यक्ति कभी कमजोर नहीं हो सकता, क्योंकि सच्चाई के साथ परमात्मा की शक्ति और आशीर्वाद जुड़े होते हैं। सच्चाई का वास्तविक अर्थ है कि हमारे मन में जो हो, वही हमारी वाणी और कर्म में भी दिखाई दे। कई बार हम दूसरों के सामने कुछ और व्यक्त करते हैं, जबकि मन में कुछ और चल रहा होता है। यही आंतरिक असमानता हमारी आत्मिक शक्ति को कमजोर करती है। सच्चा व्यक्ति किसी को दिखाने के लिए अच्छा नहीं बनता, बल्कि उसका व्यवहार उसके वास्तविक संस्कारों का प्रतिबिंब होता है।
सबसे पहले स्वयं के प्रति सच्चे बनें। अपनी कमजोरियों को स्वीकार करना, अपनी गलतियों को पहचानना और उन्हें सुधारने का साहस रखना भी सच्चाई का ही स्वरूप है। जो व्यक्ति अपनी कमी को छिपाता है, वह उसे समाप्त नहीं कर सकता है। लेकिन जो ईमानदारी से अपनी कमी को पहचान लेता है, उसके परिवर्तन का मार्ग खुल जाता है।
अक्सर मनुष्य को लगता है कि सच बोलने से किसी का विरोध सहना पड़ सकता है या कोई नुकसान हो सकता है। इसी डर से वह परिस्थितियों के अनुसार अपने शब्द और व्यवहार बदल लेता है। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से सच्चाई ही निर्भयता का आधार है। जिसके मन में छल-कपट नहीं होता, उसे किसी बात को छिपाने या अपनी छवि बचाने की चिंता नहीं रहती। जीवन हमें सिखाता है कि सच्चाई के मार्ग पर चलने के लिए आंतरिक दृढ़ता आवश्यक है। सच्चाई का अर्थ किसी को कठोर शब्दों से उसकी गलती बताना नहीं है। सत्य के साथ मधुरता, विनम्रता और शुभभावना भी होनी चाहिए। ऐसा सत्य ही कल्याणकारी बनता है, जो किसी के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाए बिना उसे सही दिशा दिखाए।
जब आत्मा परमात्मा के साथ अपना संबंध जोड़ती है, तब उसके अंदर शुद्धता और ईमानदारी के संस्कार जागृत होने लगते हैं। आत्मिक स्थिति में स्थित होकर व्यक्ति अपने संकल्पों का निरीक्षण कर सकता है। सच्चाई का अभ्यास छोटी-छोटी बातों से शुरू होता है। अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभाना, किसी की अनुपस्थिति में भी उसके प्रति सम्मान रखना, गलती होने पर उसे स्वीकार करना।

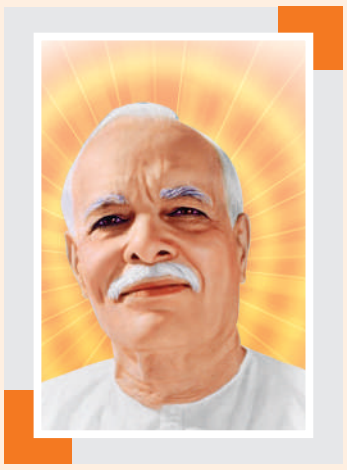
आज्ञाकारिता का गुण व्यक्ति को विनम्र बनाता है



आध्यात्मिक जीवन में आज्ञाकारिता को एक महत्वपूर्ण गुण माना गया है। यह केवल किसी के निर्देशों का पालन करना नहीं, बल्कि श्रेष्ठ ज्ञान, मर्यादा और सत्य मार्ग को अपने जीवन में धारण करना है। जब व्यक्ति के अंदर आज्ञाकारी बनने का संस्कार होता है, तब उसका जीवन सहज, व्यवस्थित और शक्तिशाली बन जाता है।
मनुष्य के जीवन में कई बार ऐसा होता है कि वह सही बात को समझने के बाद भी अपने मन के अनुसार चलना पसंद करता है। उसे लगता है कि जो मैं सोच रहा हूं, वही सही है। यही देह-अभिमान और अहंकार आज्ञाकारिता के मार्ग में बाधा बनते हैं। आज्ञाकारी आत्मा पहले सुनती है, समझती है और फिर श्रेष्ठ बात को अपने जीवन में अपनाती है। उसमें अपनी बुद्धि का अभिमान नहीं होता, बल्कि सीखने और स्वयं को सुधारने की भावना होती है।
सच्ची महानता दूसरों से अपनी बात मनवाने में नहीं, बल्कि श्रेष्ठ मत को स्वीकार करने और उस पर चलने में है। आज्ञाकारिता का गुण व्यक्ति को विनम्र बनाता है। वह अपनी मान्यताओं और स्वभाव के बंधन में नहीं रहता, बल्कि स्वयं को श्रेष्ठ बनाने के लिए सदैव तत्पर रहता है।
परमात्मा शिव की श्रीमत मनुष्य को विकारों से मुक्त कर श्रेष्ठ जीवन जीने की राह दिखाती है। जब आत्मा-परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन में धारण करती है, तब उसके विचार, वाणी और कर्म में परिवर्तन आने लगता है। क्रोध के स्थान पर शांति, अभिमान के स्थान पर नम्रता और स्वार्थ के स्थान पर सेवा का भाव विकसित होता है। आज्ञाकारी बनने का अर्थ यह भी है कि हम अपनी मनमत और परमत को छोड़कर श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करें। केवल ज्ञान सुनना पर्याप्त नहीं, बल्कि उसे व्यवहार में लाना आवश्यक है। परमात्मा की आज्ञा को जीवन में धारण करने वाली आत्मा हर परिस्थिति में मर्यादा और संयम बनाए रखती है। आज्ञाकारी व्यक्ति के अंदर टकराव और व्यर्थ संकल्प कम होते हैं।

जब बाबा ने प्यार से बच्चे को जीवनभर के लिए शिक्षा दी...

रियल लाइफ



प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, संस्थापक
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान

पिताश्री ब्रह्मा, जिन्हें लोग स्नेह से 'दादा' कहते थे जिनका सारा ही साकार जीवन एक प्रबल प्रेरणा का स्त्रोत था। परमपिता परमात्मा शिव का माध्यम बनने से काफी समय पहले, जब वे जवाहरात का व्यापार करते थे और गृहस्थ एवं सांसारिक सम्बन्धों के लेन-देन में लगे हुए थे, तब भी उनका व्यवहार और आचार लाखों-करोड़ों लोगों से श्रेष्ठ था। निस्सन्देह, दिव्य साक्षात्कारों तथा परमात्मा शिव के दिव्य प्रवेश के बाद तो उनके विचारों एवं संस्कारों में अनुपम परिवर्तन आया ही परन्तु उससे पहले का, उनके भक्तिकाल का जीवन भी सामान्यजनों के जीवन से बहुत ही ऊँचा था। इसी प्रसंग में दो-चार वृत्तान्त प्रस्तुत करेंगे -

दादा की लौकिक बहू, बृजइन्द्रा जी बताती थी कि एक बार बाबा जब अपने जवाहरात के व्यापार-केन्द्र में अपनी गद्दी पर बैठे जवाहरात की एक पुड़िया का मूल्यांकन कर रहे थे तो उन्हें अचानक ही कहीं जाना पड़ गया। दादा अपनी गद्दी के सामने रखे शीशे के एक बॉक्स पर वह पुड़िया यूं ही खुली छोड़कर अपने व्यापार-स्थान से चले गए क्योंकि उन्हें यह ख्याल था कि कोई चोरी की घटना तो घटेगी नहीं, कारण कि उनकी दुकान पर कार्य करने वाले सभी लोगों में उनका पूर्ण विश्वास था। परन्तु उस दिन अचानक ही एक सुनार, जो बाबा से श्रृंगार और जेवर बनाने के आर्डर लेकर जाता था, के छोटे बच्चे बाबा की अनुपस्थिति में वहां आए थे और वे उस पुड़िया में से कुछ जवाहरात उठा कर चंपत हो गए।

जब बाबा वापिस अपनी गद्दी पर लौटे और पुड़िया में पड़े जवाहरात से उनका काम पड़ा तो उनकी पैनी दृष्टि और अचूक स्मृति ने यह तुरन्त जान लिया कि उनमें से कुछ जवाहरात निकल गए हैं। उन्हें दुकान पर कार्य करने वाले सभी कार्यकर्ताओं में तो पूर्ण विश्वास था ही कि उन्होंने तो ये लिए ही नहीं होंगे। अतः उनमें से तो किसी को भी बाबा ने एक शब्द भी ऐसा नहीं कहा जो उनके विश्वास के भंग होने का सूचक हो। बाबा ने उनसे केवल इतना ही मालूम किया कि उनकी अनुपस्थिति में कौन आया था और कौन उनकी गद्दी वाले कमरे में गया था। जब उनको यह मालूम हो गया कि अमुक सुनार के बच्चे वहाँ आए थे तो वे तुरन्त ही अपनी गाड़ी में किसी को साथ लेकर उस सुनार के घर पहुंचे। क्रमशः

और बच्चे ने दे दी वह पुड़िया...

सुनार तो अपनी दुकान पर था और उसका बड़ा बच्चा भी दुकान पर ही था। बाबा ने उसके घर पहुंचते ही छोटे बच्चे को बुलाय और बोले- मीठे बच्चे, तुम्हारा बड़ा भाई, जो हमारी दुकान पर तुम्हारे साथ आया था, कहता है कि हीरों की पुड़िया में से जो हीरे तुम दोनों ले आये थे, वे दे दो। यह सुनते ही वह बच्चा हक्का-बक्का रह गया और क्षण भर बाद बोला - वह मुझे तो कहता था कि बाबा को मत बताना और उसने खुद बता दिया। ऐसा कह कर वह एक क्षण चुप रहा, फिर अन्दर जाकर पुड़िया ले आया। तब बाबा ने हीरे लेते हुए और प्यार करते हुए कहा -अच्छा यह तो बताओ कि ये किसलिए उठा लाये थे? उसने भोलेपन से कहा कि हमने सोचा कि इन्हें हलवाई के हवाले कर आज हम अच्छी तरह से मिठाई खायेंगे। इस सारी वार्ता में बाबा ने एक बार भी न उसे डाँटा, न उससे क्रोध किया, न उस पर हाथ ही उठाया बल्कि उसे खूब मिठाई खिलवाई और कहा- देखो, फिर कभी चोरी न करना वर्ना पुलिस पकड़ ले जायेगी और यदि तुम्हारे पिता जी को मालूम हो गया तो वे भी तुम्हारी पिटाई करेंगे। ऐसे अनेक वृत्तान्त इस बात को सूचित करते हैं कि शिव बाबा की प्रवेशता से पहले ही बाबा बहुत धीरज और शान्ति से व्यवहार करते थे।

रक्षा मंत्री ने किया नवनिर्मित दिव्य संस्कृति भवन का लोकार्पण

ब्रह्माकुमारीज़ ने 90 वर्ष में लाखों लोगों के जीवन में आध्यात्मिक चेतना का प्रकाश फैलाया है: रक्षा मंत्री

शिव आमंत्रण, लखनऊ, उप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के सुल्तानपुर रोड स्थित गुलजार उपवन राजयोग प्रशिक्षण केंद्र में नवनिर्मित दिव्य संस्कृति भवन का लोकार्पण भारत सरकार के रक्षा मंत्री एवं लखनऊ के सांसद राजनाथ सिंह ने किया। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ की 90 वर्षों की आध्यात्मिक यात्रा और लखनऊ में 72 वर्षों की सेवाओं के उपलक्ष्य में आयोजित नवदशकोत्सव कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

अपने संबोधन में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि हमें बाहरी प्रगति के साथ अपनी आंतरिक दुनिया को भी समझना होगा। यह देखना आवश्यक है कि बाहरी दुनिया में आगे बढ़ते हुए कहीं हम अपनी आंतरिक दुनिया में पीछे तो नहीं रह जा रहे हैं। इस आध्यात्मिक प्रश्न का समाधान ब्रह्माकुमारीज़ जैसी संस्थाओं के माध्यम से प्राप्त हो सकता है। आध्यात्मिकता के लिए जीवन में कोई अलग समय निर्धारित करने की आवश्यकता नहीं है। यह हमारी दृष्टि के माध्यम से सृष्टि को बदलने की प्रक्रिया है। ब्रह्माकुमारीज़ की शुरुआत सिंध में एक छोटे-से प्रयास के रूप में हुई थी, जो आज लगभग 140 देशों में मानव चेतना को संतुलन और शांति का संदेश दे रही है। यह संस्था मानवता की अनमोल विरासत है।

रक्षामंत्री सिंह ने कहा कि जब दृष्टि बदलती है, तो जीवन और व्यवहार भी बदलने लगते हैं। स्वयं को केवल शरीर नहीं, बल्कि एक चैतन्य आत्मा समझना ही आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत है। अध्यात्म अब केवल श्रद्धा का नहीं, बल्कि वैज्ञानिक अध्ययन और अनुभव का भी विषय बन चुका है। किसी संस्था की महानता केवल भवनों और केंद्रों के निर्माण से नहीं, बल्कि उससे जुड़े लोगों के जीवन में आए सकारात्मक परिवर्तन से मापी जाती है। ब्रह्माकुमारीज़ ने 90 वर्षों में लाखों लोगों के जीवन में आध्यात्मिक चेतना का प्रकाश फैलाया है। लखनऊ में लोगों को आध्यात्मिक मार्ग दिखाने और परमसत्ता से जोड़ने का संस्था का कार्य सराहनीय है।





राष्ट्र निर्माण के लिए राजनीति का आध्यात्मिकीकरण जरूरी

रक्षा मंत्री ने कहा कि देश केवल कानून से नहीं, बल्कि चरित्र से चलता है। आध्यात्मिकता केवल व्यक्तिगत मुक्ति या शांति का मार्ग नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का भी आधार है। आर्थिक विकास और आध्यात्मिक विकास एक-दूसरे के पूरक और सशक्त करने वाली शक्तियां हैं। राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का माध्यम नहीं होनी चाहिए। इसका वास्तविक उद्देश्य समाज को सही दिशा देना और राष्ट्र को सर्वांगीण विकास की ओर ले जाना है। राजनीति के साथ नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना का जुड़ना आवश्यक है, जिसे उन्होंने राजनीति का आध्यात्मिकीकरण बताया। युवाओं को राजनीति से जोड़ने के लिए राजसेवा, नैतिकता और चरित्र निर्माण की भावना को पुनः स्थापित करना होगा। इसमें ब्रह्माकुमारीज जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रक्षा मंत्री का युवाओं से आह्वान- जीवन सार्थक बनाएं

युवाओं को संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि युवा केवल देश का भविष्य नहीं, वर्तमान भी हैं। देश का निर्माण आज के प्रयासों से होता है। तकनीक का उपयोग अवश्य करें, लेकिन उसे स्वयं पर हावी न होने दें। आधुनिक बनने का अर्थ अपनी सांस्कृतिक पहचान को भूलना नहीं है, इसलिए आधुनिकता के साथ अपनी जड़ों और संस्कृति से जुड़े रहना चाहिए। सफलता बाहर से मिलती है, जबकि सार्थकता भीतर से आती है। जीवन की वास्तविक सार्थकता इससे तय होती है कि हमारे होने से कितने लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया। करियर व्यक्ति को साधन-संपन्न बनाता है, लेकिन चरित्र उसे सम्मान दिलाता है। उन्होंने युवाओं से समाज की समस्याओं की केवल आलोचना न करने, बल्कि समाधान का हिस्सा बनने का आह्वान किया।

इन्होंने भी व्यक्त किए विचार

» उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि उन्हें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि दिव्य संस्कृति भवन की आधारशिला से लेकर आज लोकार्पण की इस यात्रा के साक्षी रहे हैं। राजयोग और ध्यान मन पर विजय पाने का सशक्त माध्यम हैं। भारतीय संस्कृति में कहा गया है- मन जीते जगत जीत। भगवान बुद्ध का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि राजपरिवार में जन्म लेने के बावजूद संसार उन्हें महात्मा बुद्ध के रूप में इसलिए जानता है, क्योंकि उन्होंने अपने मन पर विजय पाई।

» ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव डॉ. राजयोगी बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि आज भारत की ओर कोई आंख उठाकर देखने का साहस नहीं कर सकता। जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान के साथ अब जय आध्यात्मिकता का संदेश भी विश्व में भारत की पहचान बन रहा है।

» ओमशांति रिट्रीट सेंटर गुरुग्राम की निर्देशिका बीके आशा दीदी ने कहा कि भारत की प्राचीन दिव्य संस्कृति को पुनः जागृत करने की आवश्यकता है और दिव्य संस्कृति भवन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास सिद्ध होगा। ब्रह्माकुमारी इस बात का जीवंत उदाहरण है कि नारी शक्ति और युवा शक्ति मिलकर समाज में कितना बड़ा परिवर्तन ला सकती है। जीवन में चुनौतियां आना स्वाभाविक है, लेकिन ज्ञान और शक्ति के आधार पर उनका सामना करना चाहिए।

» प्रयागराज की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी बीके मनोरमा दीदी ने कहा कि दिव्य संस्कृति भवन आज लखनऊ की धरती पर अपने नाम को सार्थक कर रहा है। उन्होंने अयोध्या, काशी और मथुरा की आध्यात्मिक विरासत का उल्लेख करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश की इस पावन भूमि पर अध्यात्म का परचम और भी ऊंचा लहराना चाहिए।

» लखनऊ की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी बीके राधा दीदी ने अतिथियों का स्वागत किया। इंदु, युक्ति और माही ने आकर्षक स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया, जबकि मधुबन से पधारे नितिन भाई एवं सतीश भाई ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। समारोह में अपर्णा, विधायक एपी श्रीवास्तव, विधायक योगेश शुक्ला, पवन सिंह चौहान सहित अनेक गणमान्य नागरिक एवं ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के सदस्य भी उपस्थित रहे।



मां लक्ष्मी, मां सरस्वती, श्रीगणेश की झांकी ने मोहा मन

शिव आमंत्रण, छतरपुर, मप्र।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेवाकेंद्र में दीपावली महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। इसमें छतरपुर सबजोन प्रभारी ब्रह्माकुमारी शैलजा दीदी ने कहा कि सच्ची दीपावली अर्थात् मन के विकारों को दूर कर ज्ञान, शांति, प्रेम और पवित्रता का दीप जलाना है। हमें स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों के जीवन में भी सकारात्मकता का प्रकाश फैलाना चाहिए।

कार्यक्रम में माता लक्ष्मी, श्रीगणेश जी और माता सरस्वती की आकर्षक झांकी तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां विशेष आकर्षण रहीं। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार सुरेंद्र अग्रवाल, मानवाधिकार प्रशासनिक संस्थान के संभागीय अध्यक्ष प्रकाश चंद जैन, डॉ. केके चतुर्वेदी, सेवानिवृत्त प्राचार्य एसके उपाध्याय, चौरसिया समाज के अध्यक्ष बृजेश चौरसिया तथा दर्शन महिला कल्याण समिति से राजेश गुप्ता उपस्थित रहे।

प्रशासनिक अधिकारियों को दी शुभकामनाएं-

दीपावली पर ब्रह्माकुमारी रमा बहन, ब्रह्माकुमारी रीना बहन, ब्रह्माकुमारी कमला बहन, ब्रह्माकुमारी रेखा बहन, ब्रह्माकुमारी रजनी बहन एवं ब्रह्माकुमारी सुमन बहन ने अपर कलेक्टर नमः शिवाय अरजरिया, डीआईजी विजय कुमार खत्री, पुलिस अधीक्षक रजत सकलेचा, नगर पालिका अध्यक्ष ज्योति चौरसिया, वरिष्ठ पत्रकार अजय दोसज, जानराय टोरिया के महंत भगवान दास महाराज, पूर्व विधायक आलोक चतुर्वेदी, भाजपा जिला महामंत्री विवेक उप्पल तथा खजुराहो मिनरल्स के डायरेक्टर अजय पाल सिंह परमार से मुलाकात कर दीपावली की शुभकामनाएं दीं। बहनों ने सभी को आत्मिक स्वच्छता, सकारात्मक चिंतन और श्रेष्ठ जीवन मूल्यों का संदेश दिया।



शिव आमंत्रण, हरपालपुर, छतरपुर, मप्र| ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्य धाम सेवाकेंद्र पर दीपावली महोत्सव आध्यात्मिक उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में माउंट आबू से बीके मनौती बहन, नौगांव सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नंदा बहन, हरपालपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके आशा बहन ने विचार व्यक्त किए। मां लक्ष्मी, मां सरस्वती, श्रीगणेश, श्रीराम-सीता की चैतन्य झांकी भी सजाई गई।



शिव आमंत्रण, रांची, झारखंड| ब्रह्माकुमारीज चौधरी बगान हरमू रोड में दीपावली कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर बीके प्रदीप, पूर्व अध्यक्ष मारवाड़ी युवा मंच अशोक लाठ, पूर्व अध्यक्ष पंजाबी हिंदू कम्युनिटी सुधीर कुमार उग्गल, झारखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष सुरेश चंद्र अग्रवाल, सेवाकेंद्र संचालिका बीके निर्मला दीदी, नगर निगम की महापौर रौशनी खलखो, समाजसेवी पवन कनोई एवं श्रीकृष्ण अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया।

अलौकिक दीपावली महोत्सव मनाया



शिव आमंत्रण, अरेराज, पूर्वी चंपारण। ब्रह्माकुमारीज़ ज्ञान प्रकाश भवन में अलौकिक दीपावली महोत्सव आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी अमितेश पाण्डेय, उपनिरीक्षक पर्णव कुमार, बिहार सरकार के चिकित्सा पदाधिकारी अलोक कुमार, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मीणा दीदी, वैशाली रिट्रीट सेंटर के बीके विवेकानंद भाई, बीके करुणा बहन, बीके खुशबु बहन, बीके बंदना बहन, बीके राखी सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

स्वयं अपने जीवन को प्रकाशित करें



शिव आमंत्रण, पतरातू, रामबाग। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र में आध्यात्मिक दीपावली एवं चैतन्य मां लक्ष्मी का रहस्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि समाजसेवी अर्नव कुमार ने कहा कि दीपावली प्रकाश का पर्व है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन को प्रकाशित करना चाहिए। बीके रामदेव और सेवाकेंद्र संचालिका बीके रोशनी बहन ने दीपावली का महत्व बताया। सुरभि कुमारी ने मां लक्ष्मी का स्वरुप धारण किया।



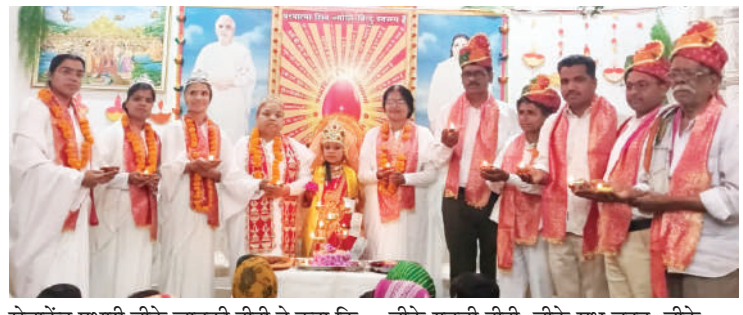
शिव आमंत्रण, गौरझामर, मप्र| ब्रह्माकुमारीज़ के गौरझामर सेवाकेंद्र पर दीपावली पर्व उमंग-उत्साह के साथ मनाया गया। सभी ने दीप जलाकर विश्व शांति, लोक मंगल और खुशहाली की कामना की। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके लक्ष्मी दीदी ने दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए कहा कि आत्मा में ज्ञान का दीप जलाकर जीवन को सुख, शांति, पवित्रता और समृद्धि से प्रकाशित करने का पर्व है दीपावली। बीके कलाबती माता ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दीपावली पर खिमलासा सेवाकेंद्र का वार्षिकोत्सव मनाया

संबंधों में नि:स्वार्थ स्नेह देना सीखें : बीके सरोज दीदी

शिव आमंत्रण, खिमलासा, बीना/मप्र।

ब्रह्माकुमारीज़ के खिमलासा सेवाकेंद्र पर दीपावली और भाईदूज पर्व मनाया गया। साथ ही सेवाकेंद्र के नौ वर्ष पूर्ण होने पर वार्षिकोत्सव भी मनाया गया। इस मौके पर बीना सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरोज दीदी ने कहा कि हर संकल्प और हर कर्म आत्मा के संस्कारों पर अपनी छाप छोड़ता है। केवल कैलेंडर बदलना पर्याप्त नहीं है। हमें अपने कर्मों की दिशा बदलनी होगी। यदि पुराने वर्ष में क्रोध अधिक किया है, तो नए वर्ष में धैर्य का अभ्यास करें। संबंधों में अपेक्षाएं अधिक रखी हैं, तो अब नि:स्वार्थ स्नेह देना सीखें।



सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जानकी दीदी ने कहा कि स्थायी शांति का अनुभव आत्मिक स्थिति से होता है। परमात्मा शिव शांति, प्रेम, पवित्रता, आनंद और शक्तियों के अनंत स्रोत हैं। बीके गुड्डी दीदी, बीके मधु बहन, बीके रिया बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कुमारी जानवी, प्रतिज्ञा, तनु, आशी, पीहू, चंचल ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।



शिव आमंत्रण, राजगढ़, मप्र | ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र में दशहरा उत्सव पर रावण दहन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी मधु दीदी सहित बड़ी संख्या में भाई-बहन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के माध्यम से बुराइयों का त्याग कर श्रेष्ठ संस्कार अपनाने का संदेश दिया गया।

शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-

वार्षिक मूल्य 210 रुपए तीन वर्ष 630 रुपए

मो 9414172596, 8521095678

Website www.shivamantran.com

पत्र व्यवहार का पता

प्रधान संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8740060231, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

For online transfer

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 9471854331

Scan To Pay

रायपुर : शान्ति शिखर की प्रथम वर्षगांठ हर्षोल्लास से मनाई

आध्यात्मिक प्रकाश स्तंभ है शांति शिखर



शिव आमंत्रण, नवा रायपुर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेक्टर-20 स्थित एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड-शान्ति शिखर की प्रथम वर्षगांठ वार्षिक उत्सव के रूप में धूमधाम से मनाई गई।
कार्यक्रम का शुभारंभ रायपुर संचालिका बीके सविता दीदी, आईटीबीपी खरोरा के डिप्टी कमांडेंट संजीव सिंह, बीके रश्मि दीदी, बीके किरण दीदी, महासमुंद की संचालिका बीके प्रीति दीदी, दुर्ग की संचालिका बीके रीटा दीदी, भाटापारा की संचालिका बीके मंजू दीदी तथा माउंट आबू से आए बीके अमरदीप भाई, उमाकांत भाई, अर्जुन भाई, हरमोहन भाई एवं मोहन भाई ने दीप प्रज्वलित कर किया।

इस दौरान बीके सविता दीदी ने कहा कि शान्ति शिखर केवल एक भवन नहीं, बल्कि विश्व में शान्ति, प्रेम और सद्भावना की ज्योति प्रज्वलित करने वाला आध्यात्मिक प्रकाश स्तंभ है। इसका उद्देश्य लोगों को बाहरी उपलब्धियों के साथ आंतरिक समृद्धि की ओर प्रेरित करना है। राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से मनुष्य अपने भीतर शान्ति, प्रेम, पवित्रता और सकारात्मकता की शक्तियों को जागृत कर सकता है। बालिकाओं ने सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया। इस मौके पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।



सेंट पीटर्सबर्ग की बीके संतोष दीदी ने बताए जीवन अनुभव

1500 भाई-बहनों ने किया विश्व शांति के लिए योग

शिव आमंत्रण, फरीदाबाद, हरियाणा।



सेक्टर-21डी में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की ओर से विश्व शांति एवं सकारात्मक ऊर्जा के प्रसार के लिए संगठित राजयोग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें लगभग 1500 भाई-बहनों ने सामूहिक योग साधना की। कार्यक्रम में सेंट पीटर्सबर्ग (रूस) की डायरेक्टर राजयोगिनी बीके संतोष दीदी ने रूस में चल रही आध्यात्मिक सेवाओं के अनुभव साझा किए और राजयोग से विश्व शांति की स्थापना का संदेश दिया।
रूस से पधारीं बीके ओल्गा सिस्टर ने विश्व को एक परिवार बताते हुए प्रेम, सम्मान और सद्भाव का आह्वान किया। मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री एवं फरीदाबाद के सांसद कृष्णपाल गुर्जर ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के आध्यात्मिक एवं सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए बहनों को समाज में शांति और भारतीय संस्कृति का संदेश फैलाने वाली बताया। कार्यक्रम में ब्रिगेडियर मुकेश कुमार, श्री राम एजुकेशन सोसायटी की डायरेक्टर डॉ. अमृता ज्योति, बीके ऊषा दीदी, बीके हरीश दीदी मुख्य रूप से उपस्थित रहीं।

जिलाध्यक्ष का सम्मान



शिव आमंत्रण, आदर्श नगर, जालंधर। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पधारने पर भाजपा जिला अध्यक्ष एवं विधिक मार्गदर्शक मनीषा जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट सम्मान करते हुए सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी संधीरा दीदी, सेवाकेंद्र सह-प्रभारी ब्रह्माकुमारी विजय दीदी।

शिक्षा मंत्री से की मुलाकात



शिव आमंत्रण, आरा, बिहार। उच्च शिक्षा एवं कानून मंत्री संजय सिंह टाइगर को आत्म-स्मृति का तिलक लगाकर ईश्वरीय सौगात भेंट करतीं ब्रह्माकुमारी किरन बहन। साथ में ब्रह्माकुमारी रूपा बहन। इस दौरान मंत्री सिंह से ब्रह्माकुमारी बहनों ने संस्थान द्वारा की जा रहीं सेवाओं के बारे में बताया।



सागर सेवाकेंद्र पर मनाया गया दीपोत्सव, झांकी सजाई

शिव आमंत्रण, सागर। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के न्यू प्रभाकर नगर मकरोनिया स्थित सेवाकेंद्र पर दीपोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें महालक्ष्मी जी की झांकी सजाई गई और पूजन कर भोग लगाया गया। सागर सेवाकेंद्र की संचालिका राजयोगिनी बीके छाया दीदी ने दीपावली का आध्यात्मिक महत्व बताया। इस मौके पर बड़ी संख्या में भाई-बहन मौजूद रहे।

नागपुर में राष्ट्रपति से की मुलाकात



शिव आमंत्रण, नासिक| महाराष्ट्र दौरे पर पहुंचीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से पुलिस अकादमी में ब्रह्माकुमारीज़ की प्रतिनिधि बहनों ने सौजन्य भेंट की। इस दौरान सोनई सेवाकेंद्र प्रभारी बीके ऊषा दीदी एवं बीके डॉ. दीपक हरके, नासिक सेवाकेंद्र प्रभारी बीके वासंती दीदी ने ईश्वरीय सौगात भेंट की। बीके संदीप, बीके अमिता बहन, बीके देवांश, बीके क्रीना बहन, बीके तपस्विनी बहन भी मौजूद रहे।

रायपुर में राष्ट्रपति से ब्रह्माकुमारी बहनों की भेंट



शिव आमंत्रण, रायपुर, छत्तीसगढ़। | राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के छत्तीसगढ़ आगमन पर रायपुर संचालिका ब्रह्माकुमारी सविता दीदी ने लोकभवन में मुलाकात कर गुलदस्ता एवं शॉल भेंटकर उनका स्वागत किया। उन्होंने राष्ट्रपति को छत्तीसगढ़ में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही विभिन्न सेवाओं से भी अवगत कराया। बीके रश्मि दीदी, महेश भाई भी उपस्थित रहे।

राज्यपाल को दी जन्मदिन की शुभकामनाएं



शिव आमंत्रण, रांची, झारखंड | ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से सेवाकेंद्र संचालिका बीके निर्मला दीदी एवं बीके इंदु दीदी ने राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से राजभवन में मुलाकात की। इस अवसर पर बहनों ने राज्यपाल को जन्मदिन की शुभकामनाएं एवं बधाई देते हुए उनके स्वस्थ, सुखद और मंगलमय जीवन की कामना की।

राज्यपाल को सेवाओं के बारे में बताया



शिव आमंत्रण, विदिशा/भोपाल, मप्र | मुखर्जी नगर सेवाकेंद्र विदिशा की ओर से प्रतिनिधिमंडल ने राज्यपाल मंगूभाई पटेल से मुलाकात कर संस्थान द्वारा की जा रहीं सेवाओं के बारे में बताया। इस अवसर पर साकेत नगर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू दीदी, बीके रेखा दीदी, बीके रुक्मणी दीदी, बीके अनु दीदी, बीके वीर भाई मौजूद रहे।

मुंबई में राज्यपाल के साथ मनाई दीपावली



शिव आमंत्रण, मुंबई | महाराष्ट्र जोन के नेपियन सी रोड सेवाकेंद्र की बीके रुक्मिणी बहन, बीके शीतल एवं बीके हर्षा ने राजभवन में राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए दीपावली मनाई।

हमारे अंतर्मन का दीप सदैव प्रज्वलित रहे

पर्व : ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में मनाया गया 12 दिवसीय दीपोत्सव महोत्सव

शिव आमंत्रण, आबूरोड, राजस्थान।





ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय में 12 दिवसीय दीपोत्सव महोत्सव मनाया गया। इस दौरान संस्थान के माऊंट आबू स्थित ज्ञान सरोवर व पांडव भवन, शांतिवन के मनमोहिनीवन, आनंद सरोवर और मान सरोवर परिसर शांतिवन में योगमय दीपोत्सव मनाया गया। इस दौरान हजारों राजयोगी भाई-बहनों ने अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त में राजयोग ध्यान के माध्यम से विश्व को सुख-शांति, समृद्धि के शुभ प्रकम्पन्न दिए। साथ ही विश्व शांति की कामना के साथ दीप प्रज्जवलित कर हर्षोल्लास से दीपावली मनाई गई। सभी ने दीपों की जगमगाहट के साथ नवयुग के आरंभ का संदेश दिया। शांतिवन में अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी का 78वां जन्मोत्सव भी मनाया गया।

डायमंड हाल में आयोजित दीपोत्सव कार्यक्रम में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मोहिनी दीदी ने कहा कि जब आत्मा परमपिता परमात्मा शिव से मन-बुद्धि का संबंध जोड़ती है, तब उसमें शांति, पवित्रता और शक्ति का संचार होता है। यही आत्मिक ज्योति का जागरण है। दीपावली का संदेश है कि केवल घरों के दीपक ही नहीं, बल्कि हमारे अंतर्मन का दीप भी सदैव प्रज्वलित रहना चाहिए।

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी ने कहा कि वास्तविक संपन्नता केवल धन-संपत्ति से नहीं मापी जा सकती। जिस व्यक्ति के पास धन तो है, लेकिन मन में शांति नहीं, संबंधों में मधुरता नहीं और व्यवहार में संतुष्टता नहीं, उसे पूर्ण संपन्न नहीं कहा जा सकता। सच्ची लक्ष्मी अर्थात ऐसी जीवन-संपदा, जिसमें पवित्रता, प्रेम, संतुष्टता, उदारता और दिव्य गुणों का खजाना हो।

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मुन्नी दीदी ने कहा कि मैंने अपने जीवन में बाबा, वरिष्ठ दादियों से जो अनुभव और ज्ञान रूपी खजाना लिया है, आज उससे ही इस ईश्वरीय यज्ञ का संचालन कर रही हूं। मुझे सदा महसूस होता है कि बाबा और दादियां मेरे साथ हैं। उनकी प्रेरणा और शक्ति हरपल महसूस होती है।

महासचिव राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि आत्मज्ञान हमें अपने विचारों को देखने और उन्हें शुद्ध बनाने की कला सिखाता है। दूसरों की कमजोरियों को देखने के बजाय अपने संस्कारों को श्रेष्ठ बनाना, पुरानी बातों को बार-बार याद करने के बजाय उन्हें समाप्त करना और हर आत्मा के प्रति शुभभावना रखना ही मन की सच्ची सफाई है। अतिरिक्त महासचिव डॉ. राजयोगी बीके मृत्युंजय भाई ने कहा कि दीपावली का महापर्व हमें आत्मा के जागरण, परमात्म मिलन, विकारों पर विजय और सतयुगी संसार की पुनर्स्थापना का दिव्य संदेश देता है। संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके सुदेश दीदी एवं बीके शशि दीदी, गीता ज्ञान विशेषज्ञ बीके ऊषा दीदी, बीके शीलू दीदी, अतिरिक्त महासचिव डॉ. प्रताप मिड्ढा, वरिष्ठ राजयोगी सूरज भाई सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।







ज्ञान सरोवर: शोभायात्रा निकाली, गंगा आरती की दर्ज पर की दीयों से आरती

शिव आमंत्रण, माउंट आबू।

ज्ञान सरोवर में बड़े ही उमंग-उत्साह के साथ दीपोत्सव महोत्सव मनाया गया। इसमें विशेष रूप से विदेशी मेहमानों ने भी भाग लिया। कैंपस में भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें ब्रह्माकुमारी बहनें कलश धारण कर शामिल हुईं। संस्थान के 90 साल पूरे होने पर नवदशकोत्सव थीम पर रंगोली बनाई गई। वहीं विशेष रूप से गंगा आरती की दर्ज पर दीपकों से आरती की गई।

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मोहिनी दीदी ने कहा कि दीपोत्सव का महापर्व हमें संदेश देता है कि जैसे एक दीपक अंधेरे को मिटाने के लिए काफी होता है, वैसे ही हमें अपना आत्म दीप जगाकर एक-एक आत्मा को दीपक बतनकर समाज, देश-दुनिया को अज्ञान-अंधकार से निकालना है। परमात्मा की हम बच्चों से यही आस है कि स्व परिवर्तन कर विश्व परिवर्तन के कार्य में अपनी अंगुली लगाना है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी ने कहा कि जिस घर में प्रेम, शांति, पवित्रता, संतोष, सद्भावना और आपसी सम्मान होता है, वही घर वास्तव में स्वर्ग समान बन जाता है। लक्ष्मी पूजन हमें प्रेरणा देता है कि अपने विचारों, व्यवहार और कर्मों को इतना श्रेष्ठ बनाएं कि हमारा जीवन दिव्य गुणों से संपन्न



उत्सव का उल्लास

बाबा की तपस्या भूमि पांडव भवन में मनाया गया दीपोत्सव महोत्सव



शिव आमंत्रण, माउंट आबू। पांडव भवन में आयोजित दीपोत्सव महोत्सव में संस्थान के सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस दौरान मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी मोहिनी दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी जयंती दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी सुदेश दीदी एवं शशि दीदी, महासचिव राजयोगी करुणा भाई सहित अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों ने दीप प्रज्जवलित कर महोत्सव का शुभारंभ किया।



शिव आमंत्रण, आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय में आयोजित 12 दिवसीय दीपोत्सव महोत्सव का आनंद सरोवर में कार्यक्रम के साथ समापन हुआ। सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों ने दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया। ब्रह्माकुमार भाईयों द्वारा सुंदर रामलीला का मंचन किया गया। इस दौरान श्रीराम- श्रीसीता के स्वयंवर, सीता हरण और श्रीराम के वनवास से पुन: अयोध्या वापिसी आदि दृश्यों को कलाकारों ने अपने अभिनय से जीवंत कर दिया। जादूगर हैरी ने कला के माध्यम से जीवन में सद्गुणों को अपनाने का संदेश दिया। रामलीला के कलाकारों में बीके लोकपाल भाई, बीके चंद्रमोहन भाई, बीके राधे भाई, बीके अतुल भाई शामिल रहे।



भिलाई में चैतन्य देवियों की झांकी बनी आकर्षण का केंद्र

शिव आमंत्रण, भिलाई (छग)।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेक्टर-7 स्थित राजयोग भवन में शरदीय नवरात्रि पर चैतन्य देवियों की दिव्य झांकी सजाई गई। शिव शक्ति स्वरूपा ब्रह्माकुमारी बहनों ने दीप प्रज्वलित कर झांकी का शुभारंभ किया। विशाल पर्वत श्रृंखलाओं और गुफाओं के बीच एक के बाद एक चैतन्य देवियों के मूर्ति स्वरूप में दर्शन ने श्रद्धालुओं को आकर्षित किया। राजयोग के नियमित अभ्यास से ब्रह्माकुमारी बहनें बिना पलक झपकाए स्थिर मुद्रा में विराजित रहीं। इससे संदेश दिया गया कि प्रत्येक आत्मा में शांति, प्रेम, शक्ति और पवित्रता जैसे दिव्य गुण विद्यमान हैं। राजयोग से इन शक्तियों को जागृत कर जीवन में अपनाया जा सकता है। इसके लिए बुराइयों, व्यसनों और नकारात्मकता का त्याग आवश्यक है।

केंद्रीय कृषि मंत्री का सम्मान



शिव आमंत्रण, मंडीदीप (भोपाल)। हिंदू उत्सव समिति मंडीदीप द्वारा आयोजित दशहरा समारोह में ब्रह्माकुमारीज की चैतन्य नौ देवियों की झांकी में पधारे केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान का संचालिका डॉ. बीके रीना दीदी ने स्मृति चिंह प्रदान कर सम्मान किया।

गृह राज्यमंत्री का किया सम्मान



शिव आमंत्रण, डीग, राजस्थान। नौ देवियों की चैतन्य झांकियों के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम, भाजपा डीग जिला अध्यक्ष सतीश बंसल, नपा अध्यक्ष भान सिंह सोनी का बीके हीरा बहन, बीके संध्या बहन, बीके प्रीति बहन ने सम्मान किया।

देवी मां की महिमा बताई



शिव आमंत्रण, रांची। ब्रह्माकुमारीज, चौधरी बगान, हरमू रोड, रांची में आयोजित दुर्गा पूजा कार्यक्रम में विभिन्न सामाजिक एवं व्यावसायिक संगठनों से जुड़े गणमान्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। संचालिका बीके निर्मला दीदी ने देवी मां की महिमा बताई।

आत्मदीप प्रज्वलित करें



शिव आमंत्रण, बिजावर, मप्र। आशीर्वाद भवन सेवाकेंद्र पर दीपावली आध्यात्मिक उल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर मां लक्ष्मी और मां सरस्वती की चैतन्य झांकी सजाई गई। बीके प्रीति दीदी ने कहा कि ज्ञान के माध्यम से आत्मदीप प्रज्वलित करने से ही जीवन प्रकाशित होगा।

चैतन्य देवियों की सजाई झांकी



शिव आमंत्रण, रतलाम, मप्र। नवरात्रि पर चैतन्य देवियों की झांकी का शुभारंभ भाजपा मंडल महामंत्री निखिल बोरीवाल, यातायात थाना प्रभारी हेमंत पाटीदार, पार्षद बलराम भट्ट, समाजसेवी शांतिलाल गोयल, बीके सविता दीदी, बीके गीता दीदी ने दीप प्रज्वलन कर किया।

दीपावली महोत्सव मनाया



शिव आमंत्रण, गया, बिहार। ब्रह्माकुमारीज सिविल लाइंस सेवाकेंद्र में आयोजित दीपावली महोत्सव कार्यक्रम में बीके शीला दीदी, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रवीन्द्र प्रसाद, प्रतिष्ठित व्यवसायी विकास कुमार, समाज सुधारक आचार्य नवीन, बालेश भिक्षु, नवल किशोर प्रसाद मुख्य रूप से मौजूद रहे।



नई राहें

बीके पुष्पेंद्र, संपादक
शिव आमंत्रण, शांतिवन

मन का संसार और मौन

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। मन को हम जितना गहराई से समझते जाते हैं, अंतर्मन की गहराई से नई परतें निकलती जाती है। मन का संसार जितना गहरा, विशाल और अथाह है उतना ही सरल और आसान है। सूचनाओं की बाढ़ से मन की धारा अनचाही दिशा में बह रही है। हम बिना सोचे-समझे मन के सागर में व्यर्थ की गागर भरते जा रहे हैं। पल-पल आते नोटिफिकेशन पर अनचाहे ही अंगुलियां यूं ही बढ़ जाती हैं, भले वह जानकारी उपयोगी है या नहीं, यह मायने नहीं रखता। नकारात्मक सूचनाओं से मन इतना लद गया है कि वह इनके बोझ से कराह रहा है, इनका भार ढोते-ढोते थक गया है, कमजोर हो गया है। परिणामस्वरूप आज तेजी से याददाश्त की कमी और भूलने की बीमारी आम समस्या बन गई है।

यहां विचारणीय प्रश्न है कि हम शरीर के लिए व्रत तो रखते हैं, क्या मन का भी व्रत रखते हैं? क्या रोज कुछ घंटे सूचनाओं के सागर से दूर रह पाते हैं? क्या कुछ समय मन को आराम देने, रिलेक्स होने के लिए भी देते हैं? शरीर की तरह मन के स्वास्थ्य पर भी ध्यान देते हैं? मन की शांति के लिए सार्थक कदम उठाते हैं? सप्ताह में एक दिन डिजिटल वर्ल्ड, सोशल मीडिया से दूर रह पाते हैं? मन के मौन के लिए भी कोई कार्ययोजना बनाई है? मन से जुड़े यह वह प्रश्न हैं जिन्हें जानना और समझना हर किसी की जरूरत है।



मन ही जीवन का वह केंद्रबिंदु है जहां से समस्याओं की रचना होती है। समस्याएं मन में बुनी गईं वह रचना है जिनके रचनाकार हम खुद हैं।

मन को साधने के प्रति जितने सजग, समझदार और सचेत रहेंगे, जीवन उतना ही आनंद और सुकून भरा होगा। हमें बचपन से शरीर विज्ञान के बारे में सिखाया गया, कहीं न कहीं मन के विज्ञान के बारे में गहराई से जानने में कमी रह गई। वर्तमान परिस्थितियों में आज बच्चों को भौतिक शिक्षा की साथ-साथ मेंटल हेल्थ की शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। दुनिया की तमाम समस्याओं की जड़ और उत्पत्ति का मूल कारण भी विकृत मानसिकता और अस्वस्थ मन ही है। यदि उसकी शक्ति को बढ़ाना है, धार देना है तो पल-पल उसकी देखभाल के लिए देना होंगे। जब हम उसका ख्याल रखना सीख जाते हैं, सकारात्मक दिशा देने में सक्षम हो जाते तो एक समय के बाद मन को उस दिशा में चलने की आदत बन जाती है। आज जरूरत है तो मन में आने वाले हर विचार का परीक्षण करने की, ताकि समुचित पहलुओं को देखते हुए मूर्तरूप दिया जा सके।

मन को मारें नहीं सुधारें

मन को मारें नहीं सुधारें। जो बातें या चीजें हमारे लिए नुकसानदायक हैं, हमें तकलीफ देती हैं उनसे दूर रहने के लिए मन को गाइड करना होगा। उसे सुझाव देना होगा कि कैसे हम उन चीजों से दूर रहकर सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। मन में जब भी नकारात्मक और हिंसक विचार उत्पन्न होता है तो अंतर्मन उस विचार के सामने एक सकारात्मक विचार भी देता है लेकिन जब हम विचारों के चुनाव में लापरवाह, गैरजिम्मेदार होते हैं तो मन नकारात्मक विचार स्वीकार कर लेता है। जब निरंतर एक तरह के विचार नकारात्मक या सकारात्मक विचारों की धारा मन में प्रवाहित रहती है तो वह उस धारा के साथ चलने की आदत बन जाती है। कुछ समय बाद उसमें अंतर्मन रम जाता है। यही अवस्था आदत में बदल जाती है।

दुनिया में जितने भी महान लोग हुए हैं उन्होंने सबसे पहले अपने मन को सही दिशा दी है, उसे अपने श्रेष्ठ लक्ष्य को पाने की दिशा में सदा एकाग्र रखा है। जिसकी बदौलत वह उस महान लक्ष्य तक पहुंच सके और दुनिया के सामने आदर्श प्रस्तुत कर पाए। ध्यान, राजयोग मेडिटेशन मन का भोजन है। इसमें यदि मौन को समाहित कर लिया जाए तो सोने पर सुहागा। मन को जब आत्म स्वरूप में स्थित कर परमात्म स्वरूप पर केंद्रित करते हैं तो अंतर्मन की शक्तियां पुनः जागृत होने लगती हैं। बिना ध्यान के मन का स्वास्थ्य और संतुलन संभव नहीं है। ध्यान और मन एक-दूसरे के पूरक हैं।

मौन से ही निकलते हैं नए सिद्धांत

ज्ञानी पुरुष मन के मौन को प्राथमिकता देते हैं। एकांत में जब एक विचार को लेकर मौन के सागर में गोता लगाते हैं तो अंतर्मन की गुफा से नए-नए विचारों का उद्भव होता है। मन को शक्तिशाली बनाने के लिए ध्यान, मां प्रकृति का सान्निध्य, सद्साहित्य या या धर्मग्रंथ का नियमित अध्ययन, एकांत में मनन-चिंतन वह औजार हैं जो मन की सोई शक्तियों को पुनः जागृत कर शक्तिशाली मन का निर्माण करने की दिशा में सबसे कारगर हैं। इसके लिए हमें सूचनाओं को सीमित करना होगा और जरूरी सूचनाओं को ही ग्रहण करने की गाइडलाइन बनाना होगी। जैसे ही मन में नवीन या रचनात्मक विचार आए तो उसे डायरी में नोट करना न भूलें। इन उपायों से निश्चिततौर पर मन हमारे नियंत्रण में आ जाता है और हम उसके मालिक बन उसे आदेश देने के काबिल हो जाते हैं।

जीवन प्रबंधन



बीके शिवानी दीदी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

प्रसन्न और हल्का मन ही सच्ची खुशी का आधार

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

हम सभी चाहते हैं कि हमारा जीवन खुशहाल हो, मन शांत रहे और हर दिन उत्साह के साथ बीते। लेकिन क्या आपने कभी अनुभव किया है कि शरीर थका हुआ न होने पर भी मन थका हुआ महसूस करता है? सबकुछ सामान्य होने के बावजूद भीतर बेचैनी रहती है। कभी पुरानी कोई घटना याद आती है, कभी भविष्य की चिंता सताने लगती है और कभी किसी व्यक्ति के व्यवहार को लेकर मन में विचारों का सिलसिला चलता रहता है। वास्तव में, हमारा मन केवल परिस्थितियों से नहीं, बल्कि उन परिस्थितियों के प्रति हमारी सोच और धारणाओं से भी बोझिल होता है।

जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भोजन, आराम और व्यायाम की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मन को स्वस्थ रखने के लिए भी उसे व्यर्थ विचारों, पुरानी शिकायतों, भय और चिंताओं से मुक्त रखना आवश्यक है। मन का हल्कापन बाहरी परिस्थितियों को बदलने से नहीं, बल्कि अपनी आंतरिक स्थिति को बदलने से आता है।



विचारों का बोझ सबसे भारी होता है-

हम दिनभर में अनेक विचार करते हैं। इनमें कुछ विचार उपयोगी होते हैं, जो हमें सही निर्णय लेने और कार्य करने में मदद करते हैं। लेकिन बहुत से विचार ऐसे होते हैं, जिनका वर्तमान में कोई उपयोग नहीं होता। जैसे उसने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? काश! मैंने उस समय ऐसा नहीं कहा होता। आगे क्या होगा? यदि मेरा काम सफल नहीं हुआ तो क्या होगा? हम एक ही घटना को बार-बार याद करके मन में दोहराते रहते हैं। घटना तो कुछ समय पहले समाप्त हो चुकी होती है, लेकिन हम उसे अपने विचारों में जीवित रखते हैं। इस प्रकार बीती हुई बात वर्तमान की शांति छीन लेती है।

हमें समझना होगा कि हर विचार पर ध्यान देना आवश्यक नहीं है। जिस प्रकार घर में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को हम अपना स्थायी सदस्य नहीं बनाते, उसी प्रकार हर विचार को मन में स्थान देना भी जरूरी नहीं है। विचारों का चयन करना सीखें। जो विचार शक्ति, शांति और समाधान दे, उसे अपनाएं। जो विचार केवल चिंता और तनाव बढ़ाए, उसे विराम दें।

अतीत को छोड़ें, वर्तमान में जीना सीखें-

मन के भारी होने का एक बड़ा कारण अतीत से जुड़ाव है। किसी ने हमारा अपमान किया, किसी ने विश्वास तोड़ा या जीवन में कोई ऐसी घटना हुई, जिसे हम भूल नहीं पा रहे हैं। हम बार-बार उसी घटना को याद करते हैं और मन ही मन उस व्यक्ति से संवाद करते रहते हैं। लेकिन सोचिए, क्या ऐसा करने से वह घटना बदल जाएगी? क्या हमारा बार-बार दुखी होना सामने वाले को बदल देगा? अतीत से सीख लेना बुद्धिमानी है, लेकिन अतीत को ढोते रहना स्वयं के साथ अन्याय है। जो हो चुका है, उसे स्वीकार करें। अपनी गलती थी तो उससे सीखें और किसी दूसरे की गलती थी तो क्षमा करने का अभ्यास करें। क्षमा करने का अर्थ गलत व्यवहार को सही मान लेना नहीं है, बल्कि स्वयं को उस घटना के मानसिक प्रभाव से मुक्त करना है। हमें अपने मन को यह समझाना होगा कि मेरा वर्तमान बहुत मूल्यवान है। मैं बीते हुए कल को बदल नहीं सकता, लेकिन आज अपने विचारों को सुंदर बना सकता हूं।

अपेक्षाओं का बोझ कम करें

हमारे मन का एक बड़ा बोझ दूसरों से जुड़ी अपेक्षाएं हैं। हम चाहते हैं कि परिवार के सदस्य हमारी इच्छा के अनुसार व्यवहार करें, बच्चे हमारी हर बात मानें, जीवनसाथी हमारी भावनाओं को बिना बताए समझ जाए और कार्यस्थल पर सभी हमारी प्रशंसा करें। जब ऐसा नहीं होता, तो मन में निराशा और शिकायतें जन्म लेने लगती हैं। हमें यह समझना होगा कि हर आत्मा के संस्कार, सोच और परिस्थितियां अलग हैं। हम किसी को अपनी इच्छा के अनुसार नहीं चला सकते। हम केवल अपने विचारों, व्यवहार और प्रतिक्रियाओं को बदल सकते हैं। दूसरों से अपेक्षा रखने के बजाय स्वयं प्रेम और सम्मान देने वाले बनें। संबंधों में अधिकार से अधिक सहयोग और शिकायत से अधिक समझदारी को महत्व दें। इससे मन का बोझ कम होगा और रिश्तों में भी मधुरता आएगी।

भविष्य की चिंता छोड़ें, पुरुषार्थ पर ध्यान दें

कई बार हम उन घटनाओं की चिंता करते रहते हैं, जो अभी हुई ही नहीं हैं। नौकरी, व्यापार, बच्चों का भविष्य, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति और सामाजिक प्रतिष्ठा को लेकर मन में अनेक आशंकाएं चलती रहती हैं। भविष्य के लिए योजना बनाना आवश्यक है, लेकिन भविष्य की चिंता में वर्तमान को खो देना उचित नहीं है। जो कार्य हमारे हाथ में है, उसे पूरी ईमानदारी और सकारात्मकता से करें। परिणाम को लेकर अत्यधिक चिंता करने के बजाय अपने पुरुषार्थ पर ध्यान दें। परमात्मा की याद हमें यह शक्ति देती है कि हम हर परिस्थिति में धैर्य और विश्वास बनाए रखें। जब मन में यह निश्चय होता है कि परमात्मा मेरा साथी और मार्गदर्शक है, तब कठिन परिस्थितियों में भी मन को सहारा मिलता है।

राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास से अनुभव करें मन का हल्कापन

मन को हल्का बनाने का एक प्रभावशाली माध्यम राजयोग मेडिटेशन है। राजयोग में हम स्वयं को शरीर नहीं, बल्कि शांति, प्रेम और आनंद स्वरूप आत्मा अनुभव करते हैं। इसके बाद परमात्मा शिव को परम शांति और प्रेम के सागर के रूप में याद करते हैं। कुछ समय शांत बैठकर अपने विचारों को सकारात्मक दिशा दें। स्वयं से कहें- मैं एक शांत स्वरूप आत्मा हूं। मैं अतीत की घटनाओं और भविष्य की चिंताओं से मुक्त हूं। मैं सभी आत्माओं के प्रति शुभभावना रखता हूं। परमात्मा की शक्तियां मेरे साथ हैं। मैं हर परिस्थिति का सामना शांति और धैर्य से कर सकता हूं। इस प्रकार के सकारात्मक संकल्पों और नियमित राजयोग अभ्यास से मन को स्थिर करने में सहायता मिलती है।

मन को हल्का रखने के सात सूत्र

- सुबह उठते ही मोबाइल देखने के बजाय सकारात्मक चिंतन करें।
- दूसरों की कमियों के बजाय उनकी विशेषताओं को देखने का अभ्यास करें।
- जो बात आपके नियंत्रण में नहीं है, उसके लिए व्यर्थ चिंता न करें।
- अपनी गलती स्वीकार करें और स्वयं को सुधारने का प्रयास करें।
- किसी के प्रति मन में शिकायत हो तो उसे शुभभावना में बदलने का अभ्यास करें।
- प्रतिदिन कुछ समय राजयोग मेडिटेशन के लिए निकालें।
- रात को सोने से पहले दिनभर के व्यर्थ विचारों और मानसिक बोझ को समाप्त करने का संकल्प लें।

जीवन को हल्का बनाने के लिए परिस्थितियों का बोझ कम करना जरूरी नहीं, बल्कि मन में जमा अनावश्यक बोझ को छोड़ना जरूरी है। जब मन हल्का होगा, तो चेहरे पर मुस्कान, व्यवहार में मधुरता और जीवन में सच्ची खुशी स्वतः दिखाई देने लगेगी। याद रखें, जीवन में परिस्थितियां हमेशा हमारी इच्छा के अनुसार नहीं होंगी। हर व्यक्ति हमारे विचारों से सहमत नहीं होगा, इन सबके बीच अपने मन को शांत और हल्का रखना हमारे अपने पुरुषार्थ पर निर्भर करता है।

समस्या- समाधान

सदा संकल्प करें.. मेरे साथ सबकुछ अच्छा हो रहा है...

राजयोगी बीके सूर्य
वरिष्ठ राजयोग शिक्षक
शिव आमंत्रण, आबू रोड/राज.।



जीवन में सुख और दुख, सफलता और असफलता, अनुकूलता और प्रतिकूलता आती रहती है। लेकिन इन परिस्थितियों के बीच हमारी सोच कैसी रहती है, यही हमारे जीवन की दिशा तय करती है। यदि हम एक संकल्प को अपने जीवन का हिस्सा बना लें कि मेरे साथ सबकुछ अच्छा हो रहा है, मेरे सिर पर सदा परमात्मा का वरदानी हाथ है, तो जीवन को देखने का हमारा नजरिया ही बदल सकता है।

अक्सर जब कोई कार्य हमारी इच्छा के अनुसार नहीं होता, तो हम परेशान हो जाते हैं। मन में प्रश्न उठता है कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ? लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण हमें सिखाता है कि हर परिस्थिति को सकारात्मक नजरिए से देखना चाहिए। हो सकता है आज जो घटना हमें परेशानी लग रही है, वही भविष्य में किसी बड़े लाभ का कारण बन जाए। इसलिए किसी भी परिस्थिति में घबराने या निराश होने के बजाय विश्वास रखें कि इसमें भी मेरा कोई कल्याण छिपा है। जब हम हर परिस्थिति में अच्छा देखने का अभ्यास करते हैं, तब मन में शिकायतें कम और संतुष्टता बढ़ने लगती है।

परमात्मा का वरदानी हाथ मेरे सिर पर है

जरा विचार करें, जब कोई बच्चा अपने पिता का हाथ पकड़कर चलता है, तो उसे रास्ते की कठिनाइयों का भय नहीं रहता। उसे विश्वास होता है कि पिताजी मेरे साथ हैं। इसी प्रकार जब हम परमात्मा शिव को अपना पिता और परम शिक्षक मानकर उनकी याद में रहते हैं, तो भीतर एक विशेष शक्ति और सुरक्षा का अनुभव होता है। परमात्मा का वरदानी हाथ हमारे सिर पर है, यह भाव हमें अकेलेपन, भय और चिंता से मुक्त करता है। इसका अर्थ यह नहीं कि जीवन में कठिनाइयां नहीं आएंगी, बल्कि यह विश्वास है कि हर परिस्थिति का सामना करने की शक्ति परमात्मा से मिल सकती है।

अपने मन को दें सकारात्मक निर्देश

हम दिनभर अपने मन में अनेक बातें दोहराते हैं। यदि बार-बार सोचेंगे कि मेरे साथ अच्छा नहीं होता, मेरी किस्मत खराब है, तो मन उसी प्रकार की नकारात्मकता से भरता जाएगा। इसके विपरीत प्रतिदिन स्वयं को सकारात्मक संकल्प दें-

- मेरे साथ सबकुछ अच्छा हो रहा है।
- परमात्मा सदा मेरे साथ हैं।
- हर परिस्थिति मेरे कल्याण के लिए है।
- मैं शक्तिशाली, शांत और भाग्यवान आत्मा हूं।
- मेरे जीवन में सुख, शांति और आनंद के नए अवसर आ रहे हैं।

सुबह उठते ही कुछ मिनट इन संकल्पों को मन में दोहराएं और परमात्मा से शक्ति प्राप्त करें।

विश्वास रखें और श्रेष्ठ पुरुषार्थ करें-

परमात्मा पर विश्वास रखने का अर्थ हाथ पर हाथ रखकर बैठना नहीं है। हमें अपने कर्म श्रेष्ठ बनाने हैं, जिम्मेदारियां ईमानदारी से निभानी हैं और हर परिस्थिति में धैर्य बनाए रखना है। जब सकारात्मक सोच के साथ श्रेष्ठ कर्म जुड़ जाते हैं, तब जीवन में सफलता और संतुष्टता का अनुभव बढ़ता है। आइए, आज से शिकायत करना छोड़ें और शुक्रिया कहना शुरू करें। हर सुबह मुस्कराकर स्वयं से कहें- वाह मेरा भाग्य वाह, वाह शिव बाबा वाह। आपका शुक्रिया। मेरे साथ सबकुछ अच्छा हो रहा है। आपके वरदानी हाथ की छत्रछाया सदा मेरे सिर पर है। मैं बहुत भाग्यवान आत्मा हूं। मैं बहुत खुशनसीब आत्मा हूं। मैं देवकुल की आत्मा हूं। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूं। इन स्वमानों का रोज मन ही मन अभ्यास करेंगे तो आपका बिगड़ा भाग्य भी बनने लगेगा। किस्मत चमक जाएगी। जीवन में सबकुछ अच्छा होने लगेगा। जीवन खुशियों से भरपूर हो जाएगा। यही विश्वास हमारे मन को शक्तिशाली बनाएगा और जीवन की हर चुनौती को मुस्कराकर स्वीकार करने की प्रेरणा देगा।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2024-26, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Nov. 2026
» प्रकाशक व मुद्रकः करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » प्रधान संपादकः बीके कोमल » संपादकः बीके पुष्पेन्द्र